पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा

अंकुर

सितंबर 2015

महिला सशक्तिकरण

प्रादेशिक भाषाएं, हमारा गौरव

हिंदी दिवस

पी.एस.बी

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

Punjab & Sind Bank

(राजभाषा विभाग)

आंचलिक प्रबंधक सम्मेलन

बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, श्री जतिन्दर बीर सिंह, (आई.ए.एस.) आंचलिक प्रबंधकों को संबोधित करते हुए। बायी ओर कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश जैन तथा दायी ओर मुख्य महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह भाटिया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

सितंबर, 2015

मुख्य संरक्षक

श्री जतिन्दरवीर सिंह, आई.ए.एस.

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री एम. के. जैन

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री दीन दयाल शर्मा

महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक

श्री राजिंदर सिंह बेवली

मुख्य प्रबंधक

प्रभारी, राजभाषा

संपादक मंडल

श्री कंवर अशोक

श्री राजीव कुमार राय

वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

श्री त्रिलोचन सिंह, डॉ. नीरू पाठक

प्रबंधक

श्री सोनी कुमार

राजभाषा अधिकारी

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस

5/35ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015

फोन : 98100 87743

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	संदेश - गृह मंत्री	2
3.	संदेश - वित्त मंत्री	3
4.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	4
5.	संपादकीय	5
6.	आपकी कलम से	6
7.	गतिविधियाँ	7
8.	10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	8-11
9.	दिलों में जिंदा रहेंगे कलाम	12-13
10.	बैंक की आशा - बढ़े कासा	14-16
11.	हमें इन पर गर्व है	16
12.	नराकास गतिविधियाँ	17
13.	हिचक छोड़ें, हिंदी बोलें	18-19
14.	जज्बातों की तिजारत....	20
15.	हिंदी पखवाड़ा	21
16.	हिंदी दिवस	22-23
17.	पुरस्कार वितरण समारोह	24
18	ज़रा सोचिए/जिंदगी/कार्टून कोना	25
19.	अपने घर में हिंदी	26-27
20.	आओ हिंदी अपनाएं	27
21.	हिंदी कार्यशाला	28
22.	विमोचन	29
23.	सेवक	30-32
24.	राजभाषा समाचार	33
25.	आंचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन	34-35
26.	मस्तिष्क की सेहत भी ज़रूरी है	36-37
27.	ये चार हैं बेकार	37
28.	स्वाधीनता - बंगला कहानी (हिंदी अनुवाद सहित)	38-39
29.	महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से सुरक्षा बंधन का महत्व	40-41
30.	बैंकों का बदलता परिदृश्य और राजभाषा हिंदी	42-43
31.	हिंदी दिवस एक सोच / मसला	44

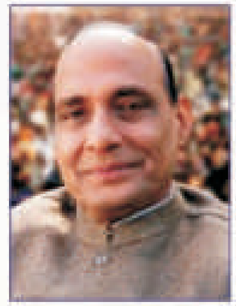

राजनाथ सिंह

RAJNATH SINGH

गृह मंत्री, भारत

HOME MINISTER, INDIA

संदेश

प्रिय देशवासियो।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा किसी भी देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक साहित्यिक एवं दार्शनिक पहलुओं को जानने समझने का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना सामाजिक, पारंपरिक एवं साहित्यिक धरोहर को सहेज कर नहीं रख सकता। भाषा देश की सभ्यता एवं संस्कृति की संवाहक होती है। यह निर्विवाद सत्य है कि हमारे देश में जिस दिन अंत-प्रतिशत सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में होने लगेगा उसी दिन हमारी "विविधता में एकता" स्थापित होने का कार्य स्वतः ही सिद्ध हो जाएगा।

भारत में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है। हिंदी ने ही संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर जागृत बनाए रखा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह भाषा पूर्णतः वैज्ञानिक है तथा इसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है। राजभाषा हिंदी में समरसता है और इसका शब्दकोश व्यापक एवं समृद्ध है।

जो देश आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं उनकी भाषा के पंख भी बड़े तेज होते हैं और आने वाले दिनों में हिंदी और भारतीय भाषाओं के साथ भी ऐसा होगा। भाषा का आर्थिक स्थिति से सीधा संबंध होता है। दुनिया के सभी लोग उस भाषा को सीखना चाहते हैं जिससे उनको व्यवसाय करने में आसानी होती है। जो देश अपनी भाषा को अपनाता है वह अपने देश को तो महान एवं शक्तिशाली बनाता ही है, साथ ही उस देश के जनमानस को अपनी भाषा के ज्ञान के सागर में डुबकी लगाने का आनंद और अवसर भी मिलता है।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र प्रेम को भी मजबूत बनाता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक होती है और ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम से संभव नहीं है। राजभाषा हिंदी, सरकार और जनता के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है।

उपर्युक्त सभी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को 'हिंदी' को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार यह प्रावधान किया गया है कि संघ सरकार की राजभाषा 'हिंदी' एवं लिपि 'देवनागरी' होगी। संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह भारत की सामासिक, सांस्कृतिक तत्वों तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं अभिवृद्धि सुनिश्चित करे।

हम सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि केंद्र सरकार के कार्मिक को अधिक से अधिक कामकाज हिंदी में करने और दक्ष बनाने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी शिक्षण योजना एवं केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अंतर्गत अभ्यास आधारित एवं दैनिक उपयोग के लिए जुलाई, 2015 से एक नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 'पारंगत' प्रारंभ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में सरकारी पत्राचार के विभिन्न रूपों को हिंदी में सहज रूप में तैयार करने के लिए नमूनों के माध्यम से समझाने की व्यवस्था की गई है।

आज के वैश्विक एवं उदारीकृत अर्थव्यवस्था के युग में नई पीढ़ी को अपनी भाषा के साथ जोड़ने के प्रयोजन से यह आवश्यक है कि राजभाषा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में पर्याप्त साहित्य और वैज्ञानिक तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी हुई जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध हो। आज की नई पीढ़ी हर तरह की सूचना एवं जानकारी इंटरनेट में ही खोजती है। दूसरी भाषाओं की अपेक्षा इंटरनेट पर हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में सूचना व साहित्यिक सामग्री बहुत कम मात्रा में उपलब्ध है। इसलिए वर्तमान में यह नितांत आवश्यक हो गया है कि भारत सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/संस्थानों एवं निजी संस्थाओं व व्यक्तियों के द्वारा अधिक से अधिक लाभदायक, सूचनात्मक एवं ज्ञान से परिपूर्ण जानकारी हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में इंटरनेट पर उपलब्ध कराई जाए ताकि राजभाषा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सके।

मैं केंद्र सरकार के कार्यालयों के प्रमुखों से अपील करता हूं कि वे राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी का निर्वहन करें। आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के अपने संवैधानिक और नैतिक दायित्व को निभाने का संकल्प लें। मैं पुनः हिंदी दिवस के अवसर पर आपको इस दिशा में सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिंद।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2015

राजनाथ सिंह

अरुण जेटली
वित्त, कार्पोरेट कार्य
एवं सूचना एवं प्रसारण मंत्री
भारत

Arun Jaitley
Minister of Finance, Corporate Affairs
and Information & Broadcasting
India

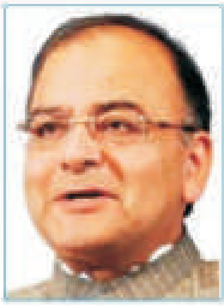

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं।

भारत को अक्सर विविधता में एकता वाले देश की उपाधि से विभूषित किया जाता है। यह विविधता विभिन्न ऋतुओं, पर्वतीय-मैदानी-समुद्री क्षेत्रों में निहित होने के साथ-साथ, भाषाओं-बोलियों, खान-पान, वेष-भूषा, परंपराओं में भी व्यक्त हुई है। हमारी विविध रंगों वाली संस्कृति को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करती है हिंदी। सदियों की यात्रा करके आई और आज राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिंदी वह सेतु है जो, सांस्कृतिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों को जोड़ने की क्षमता रखती है।

14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर, मैं वित्त मंत्रालय तथा इसके सभी संबंद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, बीमा कंपनियों एवं विनियामक निकायों के सभी अधिकारियों व अन्य कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

आइए, हम सब हिंदी के प्रसार को और व्यापक करने का संकल्प लें।

अरुण जेटली

हिंदी दिवस समारोह में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन जी, मेरे साथी महाप्रबंधक महोदय, विभागाध्यक्ष व मेरे प्यारे साथियो,

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। जैसा कि आप जानते ही हैं आज हम सब, यहाँ 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में एकत्रित हुए हैं। यह एक ऐसा दिन है, जो हमें यह अहसास दिलाता है कि हमें अपना काम हिंदी में करने की आवश्यकता है। यह दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि अपनी हिंदी में काम करने की जिम्मेवारी हम किस हद तक सही ढंग से निभा रहे हैं। पिछले दिनों इस भवन में बहुत सी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं और मुझे यह जानकर बहुत ही खुशी हुई कि सभी स्टाफ सदस्यों ने बड़े ही उत्साह से इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। स्टाफ सदस्यों ने यह दिखा दिया कि उनमें कुछ करने की लगन भी है और जोश भी। आज 'हिंदी पखवाड़ा' संपन्न हो रहा है। तो क्या यह समझ लिया जाए कि 'हिंदी पखवाड़ा' या 'हिंदी दिवस' खत्म हो गया?

जी नहीं, हिंदी दिवस की वास्तविक परीक्षा हिंदी दिवस के बाद से ही शुरू होती है जब स्टाफ अपनी सीटों पर जा कर हिंदी में अपने काम शुरू करता है। हमें राजभाषा हिंदी को केवल 'हिंदी दिवस' या 'हिंदी पखवाड़े' तक सीमित नहीं रखना है। सभी स्टाफ सदस्यों ने हिंदी प्रतियोगिताओं में बड़े ही उत्साह से भाग लिया है। अतः जो उत्साह पिछले दिनों 'हिंदी' के प्रति बना है, वही उत्साह आगे भी बनाए रखना है। ये जोश और उत्साह अब फाइलों और पत्रों में भी नजर आना चाहिए और कार्यालय की फाइलें अब हिंदी में भी और अधिक दिखाई देनी चाहिए। कल सबसे पहला काम आप ये करें कि अपनी उपस्थिति हिंदी में लगाएं और स्टाफ को भी ऐसा ही करने के लिए कहें। यहीं से शुरूआत करते हुए अपनी फाइलों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं और अधिक से अधिक टिप्पणियां और अधिक से अधिक पत्राचार हिंदी में करें।

मुझे और अच्छा लगेगा यदि आप मेरी टेबल पर भी अधिक से अधिक पत्र हिंदी में भेजें। सभी विभागाध्यक्ष इस दिशा में स्टाफ को भी प्रेरित करें और स्वयं भी कोशिश करें। यदि आप मुझसे भी अधिक से अधिक हस्ताक्षर हिंदी में करवाएंगे तो मुझे भी खुशी होगी।

यदि आप कार्यालय की हर सीट के कामों को भी ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि ज्यादातर पत्र रुटीन पत्र होते हैं जो काफी मिलती जुलती किस्म के होते हैं। यदि ऐसे सभी पत्र हिंदी में बना लिए जाएं तो हिंदी पत्राचार और अधिक बढ़ेगा। सभी विभागों के अध्यक्षों से मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि वे अपने-अपने विभागों में हिंदी में किए जा रहे वास्तविक कार्यों का आंकलन करें और सुनिश्चित करें कि हर सीट से किसी न किसी तरह के पत्र हिंदी में ज़रूर निकाले जा रहे हों।

हिंदी में काम करना इतना मुश्किल भी नहीं। यह आपका फर्ज भी है और संवैधानिक अनिवार्यता भी। राजभाषा के निरीक्षण वित्त मंत्रालय, गृह मंत्रालय, भारतीय रिज़र्व बैंक और संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भी किए जाते हैं। इसलिए राजभाषा हिंदी में काम बढ़ाने के लिए आप गंभीरतापूर्वक कार्य करें।

मेरी आपको एक और सलाह रहेगी कि जितना अधिक हिंदी में काम आप हिंदी विभाग की मदद लिए बिना करेंगे उतना ही आपमें आत्मविश्वास पैदा होगा और उतनी ही स्वाभाविकता से राजभाषा हिंदी आगे बढ़ सकेगी। हिंदी विभाग की मदद केवल बहुत ही मजबूरी में लेनी चाहिए। आपको कोई प्रशिक्षण चाहिए तो आप हिंदी विभाग से संपर्क करें। वे आपकी सीट पर आकर आपको हिंदी में प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। लेकिन बाद में आप खुद कोशिश करें। आप देखेंगे कि हिंदी (टिप्पणियों) नोटिंग, हिंदी ड्राफ्टिंग के साथ-साथ आपका हिंदी पत्राचार भी तेज़ी से आगे बढ़ेगा। लेकिन यदि हम हिंदी विभाग पर ही निर्भर करेंगे तो हिंदी को उसका वास्तविक गौरव प्रदान नहीं कर पाएंगे। बैंक के थोड़े से हिंदी अधिकारी पूरे बैंक के काम को हिंदी में नहीं कर पाएंगे, यह मानकर चलिए।

अंत में, मैं हिंदी शील्डों के विजेता कार्यालयों को, हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को, हिंदी प्रतियोगिताओं के सहभागियों को तथा सभी स्टाफ सदस्यों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.)

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

"राजभाषा अंकुर" पत्रिका के माध्यम से आपके साथ संवाद स्थापित करना और वह भी राजभाषा हिंदी में, मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की सबल, सशक्त तथा समर्थ संवाहिका है। इसीलिए 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघीय राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और तभी से यह दिन "हिंदी दिवस" के रूप में मनाया जाता है। आप सभी को मेरी ओर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। इस वर्ष हिंदी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं में स्टाफ सदस्यों ने बड़ी संख्या में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मैं, न केवल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों का, बल्कि उन सभी का जिन्होंने प्रतियोगिताओं में सहभागिता की एवं संयोजन किया, राजभाषा विभाग की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ। हमारे संविधान में 22 भारतीय भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। देश में भाषाओं की विविधता तथा बैंक में सभी क्षेत्रों से आए विभिन्न भाषा-भाषी स्टाफ सदस्यों को ध्यान में रखकर, पत्रिका के पिछले अंक से हमने एक प्रादेशिक भाषा को भी अंकुर में स्थान देना प्रारंभ किया है, जिसकी सराहना न केवल बैंक में बल्कि वित्त-मंत्रालय द्वारा भी की गई है। इसी कड़ी में प्रस्तुत अंक में बंगला भाषा की कहानी, हिंदी अनुवाद सहित प्रस्तुत की जा रही है। हमारे इस भाषिक एकता सूत्र संयोजन में आप सभी बढ़-चढ़कर भाग लें, जिससे हमारा यह प्रयास बैंकिंग जगत में अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

हमारी पत्रिका में नित नए आयाम जुड़ते जा रहे हैं। "जरा सोचिए" स्तंभ की सफलता के पश्चात हम इस अंक से "कार्टून कोना" भी आरंभ कर रहे हैं। इसके लिए भी हम आपके नियमित सहयोग की अपेक्षा करते हैं। इस अंक में राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग से संबंधित लेखों के साथ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए प्रारंभ की गई "सुरक्षा बंधन योजना" से संबंधित जानकारी समाहित की गई है। यह लेख आपको ज्ञानवर्धक होने के साथ लाभप्रद भी लगेगा।

आशा है बैंकिंग एवं साहित्यिक विविधताओं से परिपूर्ण राजभाषा अंकुर का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका के बारे में अपनी राय हमें अवश्य भेजें, ताकि हम इस पत्रिका को पाठकों की रुचि तथा आवश्यकतानुसार ढाल सकें।

दीन दयाल शर्मा

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

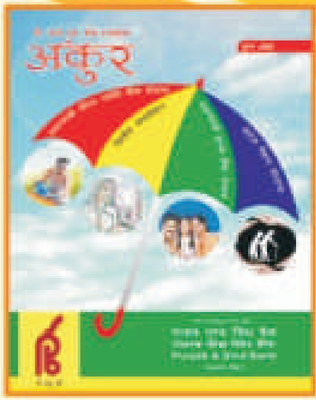

आपकी कलम से....

अंकुर का जून, 2015 अंक मिला, धन्यवाद। पत्रिका जहाँ एक ओर बैंकिंग संबंधी क्रिया-कलाप अपने पाठकों को अवगत कराने में सफल हुई है, वहीं दूसरी ओर समसामायिक लेखों के समावेश से पत्रिका की उपादेयता और भी बढ़ गई है। पत्रिका का मुद्रण स्तरीय और साज-सज्जा आकर्षक है। इसके कुशल संपादन के लिए हमारी बधाई स्वीकारें।

विजय पाल
महाप्रबंधक, आई.एफ.सी.आई लिमिटेड
नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019

'अंकुर' का जून 2015 अंक प्राप्त हुआ। बैंकिंग संबंधी नवीनतम जानकारियों और विद्वत्तापूर्ण लेखों के साथ ही भावपूर्ण कविताओं और कहानियों का पत्रिका में समावेश आपके सुरुचिपूर्ण संपादन कौशल का परिचायक है। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में डॉ. वेद प्रकाश दुबे का आलेख 'हरे भरे वृक्षों के होने से जीवन चहकेगा' अत्यंत सरल शब्दों में, हमारे आस-पास ही हरहरा रहे वृक्षों का अनजाना परिचय दे गया। जिस किसी ने भी इस आलेख को पढ़ा होगा, पर्यावरण संबंधी उसके ज्ञान में निस्संदेह वृद्धि हुई होगी। पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर फुटनोट में दिए गए महान व्यक्तियों के हिंदी भाषा संबंधी विचार अत्यंत प्रेरक हैं। बैंक की गतिविधियों का सचित्र विवरण देती, अपने आप में संपूर्ण इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपको साधुवाद व शुभकामनाएं।

स्मिति मिश्रा
प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक
स्थानीय प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का कवर नवीनता लिए हुए काफी खूबसूरत बन पड़ा है। यह जानकर बहुत ही अच्छा लगा कि पत्रिका में प्रादेशिक भाषाओं को भी महत्व देना प्रारंभ कर दिया गया है और यह और अच्छी बात है कि मर्मस्पर्शी ओड़िया कहानी के साथ इसका हिंदी अनुवाद कार्य भी उतनी ही गंभीरता से किया गया है जिसके लिए कहानी के लेखक श्री रुद्र प्रसाद मोहान्ती और उसके अनुवादक श्री प्रदीप कुमार राय दोनों ही बधाई के पात्र हैं।
वित्त मंत्रालय वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. वेद प्रकाश दुबे जी ने अपने 'हरे भरे वृक्षों के होने से जीवन चहकेगा' लेख में वनों की आवश्यकता और विशेषकर 'नीम', 'पीपल', 'यूकेलिप्टस' आदि वृक्षों के गुण बड़े ही सधे और सरल अंदाज में समझाकर मानवता की भलाई का काम किया है। पत्रिका में प्रकाशित प्रधानमंत्री जी की विभिन्न योजनाएं न केवल जानकारीपरक हैं बल्कि लेखकों ने इन्हें बड़ी ही सरलता से समझाने में भी सफलता प्राप्त की है। इस सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है। आशा है भविष्य में भी पत्रिका के ऐसे अंक पढ़ने का अवसर हमें प्राप्त होता रहेगा।

राजू दास
आंचलिक प्रबंधक, गुवाहाटी

कोयल की शोभा स्वर है, स्त्रियों की शोभा पतिव्रता है, असुंदरों की शोभा विद्या है, तपस्वियों की शोभा क्षमा है। - चाणक्य

गतिविधियाँ

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के उप सचिव श्री गुलाब सिंह व अग्रणी बैंक, पंजाब नैशनल बैंक के अधिकारियों द्वारा सेक्टर–16, पंचकूला शाखा के निरीक्षण के दौरान, शाखा द्वारा किए जा रहे "प्रधानमंत्री मुद्रा योजना" संबंधी कार्यों/प्रगति की सराहना की गई। इस अवसर पर वित्त–मंत्रालय के उप सचिव श्री गुलाब सिंह को पुष्प भेंट करते हुए शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री एच. एस. सोढ़ी।

आंचलिक कार्यालय लखनऊ में डॉ. वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक, वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की विशेष बैठक

श्री राजीव रावत, आंचलिक प्रबंधक, लखनऊ डॉ. वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग (राजभाषा) का पुष्प–गुच्छ से स्वागत करते हुए।

डॉ. वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) आंचलिक कार्यालय, लखनऊ के स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए।

10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन - संस्मरण

10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन
10-12 सितंबर, 2015
भोपाल, भारत

देवेन्द्र कुमार

भारत के हृदय प्रदेश, मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित 10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन अपने वैश्विक पड़ाव से गुजर रहा है। आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व इस सम्मेलन ने अपनी ऐतिहासिक यात्रा भारत की पुण्य भूमि से ही प्रारंभ की थी। उसके बाद सन 1983 में तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन पुनः भारत में किया गया। तत्पश्चात क्रमशः मॉरीशस, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, यू. के., सूरीनाम, अमरीका व दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग की वैश्विक यात्राओं से होते हुए सम्मेलन ने अपना 10वाँ पड़ाव मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में डाला तथा अपने विषय को सार्थक किया। सम्मेलन का मुख्य विषय था- 'हिंदी जगत : विस्तार एवं संभावनाएं'। गणमान्य अतिथियों से सुशोभित यह सम्मेलन कई अर्थों में महत्वपूर्ण रहा। भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी ने अपने स्वागत भाषण में इस बात का विशेष रूप से उल्लेख किया कि विगत विश्व हिंदी सम्मेलनों में केवल विचार-विमर्श होते थे लेकिन इस सम्मेलन में सत्रों के आयोजन के पश्चात् अंतिम दिन अर्थात दिनांक 12.09.2015 को रिपोर्ट भी सबके सामने प्रस्तुत कर, संबंधित मंत्रालयों व विभागों को अनुमोदन हेतु अग्रेषित की जाएगी।

भोपाल अंचल के हमारे राजभाषा अधिकारी श्री देवेन्द्र कुमार 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के ऐतिहासिक पलों के गवाह रहे। इस लेख में उन्होंने अपने उन विशेष पलों को संजोने की कोशिश की है। देश की जानी-मानी हस्तियों के साथ उनके छायाचित्र लेख को सजीवता प्रदान कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश की पावन भूमि जो गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ. रामकुमार वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिशंकर परसाई, कवि प्रदीप, शरद जोशी, कैफ भोपाली, निदा फाजली, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान हिंदी सेवियों की कर्मभूमि रही है, में 10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन निःसंदेह चिरस्मणीय रहेगा। भोपाल के लाल परेड मैदान के जिस क्षेत्र में सम्मेलन का आयोजन हुआ, उसे माखन लाल चतुर्वेदी नगर नाम दिया गया था। इसके अंतर्गत ही उद्घाटन, समापन-सत्र तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए रामधारी सिंह दिनकर जी के नाम से सभागार बनाया गया था। विदेश मंत्री ने मध्यप्रदेश में इसके आयोजन के दो महत्वपूर्ण कारण बताए, पहला तो मध्यप्रदेश हिंदी के लिए समर्पित राज्य है और दूसरा भोपाल इस प्रकार के सफल सम्मेलनों के लिए जाना जाता है। स्वागत भाषण में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'यह एक अद्भुत संयोग है कि सन 1918 में इन्दौर में आयोजित अखिल भारत हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय पद से भाषण देते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने हिंदी को ही भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की थी और उसी गुजरात से आए हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी

मध्यप्रदेश की पुण्यभूमि से विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया।'

'रामधारी सिंह दिनकर सभागार' में माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने उद्घाटन भाषण के दौरान कहा कि समूचा विश्व आज भारत को बड़े बाजार के रूप में देख रहा है और इस दृष्टि से हिंदी अंतर्राष्ट्रीय बाजार की भाषा बन चुकी है। आज समस्त विश्व हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित हो रहा है। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आंदोलन सर्वप्रथम अहिंदी क्षेत्रों से ही प्रारंभ किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी दयानन्द सरस्वती, काका कालेलकर, के. आयंगर मुंशी, राजगोपालाचारी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक इत्यादि महान विभूतियां सम्मिलित हैं। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि आज भाषा के रूप में सभी राज्यों के पास अमूल्य खजाना है। प्रत्येक पीढ़ी का दायित्व है कि वह अपनी भाषाई विरासत को नई पीढ़ी में हस्तांतरित करे। भाषाविदों के अनुमान के मुताबिक 21 वीं सदी के अंत तक विश्व की छः हजार भाषाओं में से लगभग 90 प्रतिशत भाषाओं के लुप्त होने की संभावना है। उन्होंने कहा कि वर्तमान मानव पीढ़ी की यह प्रवृत्ति है कि हम किसी चीज के लुप्त होने के बाद उसमें रुचि दिखाना प्रारंभ करते हैं। हमें उसकी क्षमता का एहसास तभी होता है जब वह हमारे पास नहीं होता है। आज हमारे पुरातत्त्ववेत्ता किसी पत्थर, निशान के आधार पर लुप्तप्राय चीजों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, जीव वैज्ञानिक लुप्त हुए जंतुओं की जानकारी के लिए न जाने कितना शोध करते हैं और उस पर लाखों-करोड़ों रुपये बर्बाद हो जाते हैं। हम आज सोचते हैं कि डायनासोर कैसे रहे होंगे, खुदाई से प्राप्त ढांचे के आधार पर उसकी संरचना निर्मित कर लोगों के मध्य प्रस्तुत करते हैं, भाषा के संबंध में भी ऐसा न हो इसलिए हमें अपनी भाषा की समृद्धि व संरक्षण के लिए प्रयास करने होंगे। उन्होंने भाषाविदों से आग्रह किया कि अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी को समृद्ध करें। भाषा सदैव जोड़ने का माध्यम होती हैं। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि भाषा का अपना विशेष प्रभाव होता है स्वयं 2014 लोकसभा चुनावों के दौरान उन्हें इसका व्यक्तिगत अनुभव रहा है, वे जिस क्षेत्र में भी चुनावी रैली को संबोधित करते थे वहाँ की क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग अवश्य करते और देखते थे कि लोगों के मध्य एक इलेक्ट्रॉनिक तरंग उत्पन्न हो जाती है यह भाषा का ही प्रभाव था। उन्होंने सभी रैलियों में हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया, जिसका परिणाम लोकसभा चुनाव के परिणाम के रूप में सामने था। प्रधानमंत्री जी ने बताया कि यदि उन्हें हिंदी नहीं आती तो उनका क्या होता? वे एक छोटे से क्षेत्र में ही सिमटकर रह जाते। हिंदी भाषा ज्ञान के विषय में उन्होंने बताया कि हिंदी बहुत आसानी से सीखी जा सकने वाली भाषा है। उनसे लोग पूछते हैं कि उन्होंने हिंदी कैसे सीखी?प्रधानमंत्री के शब्दों में ''बचपन में मुझे चाय बेचते-बेचते हिंदी सीखने का अवसर मिला क्योंकि मेरे गांव में उत्तरप्रदेश के व्यापारी जो मुंबई में दूध का व्यापार करते थे, उनके एजेंट जो ज्यादातर उत्तरप्रदेश के लोग हुआ करते थे, वो हमारे गांव के किसानों से भैंस लेने आते थे और दूध देने वाली भैंसों को ट्रेन के डिब्बों में मुंबई ले जाते थे और बाद में जब भैंस दूध देना बंद कर देती थी, उन्हें वापस गाँव छोड़ जाते थे, तो ज्यादातर रेलवे स्टेशन में इनका कारोबार चलता रहता था, मुझे उन्हें चाय बेचने जाना होता था, उन्हें गुजराती नहीं आती थी और हिंदी जाने बिना मेरे पास कोई चारा नहीं था इस प्रकार मुझे चाय ने हिंदी सिखा दी थी।''

उद्घाटन सत्र के बाद चार अलग-अलग सभागारों में समानांतर सत्र संचालित किए गए। चारों सभागारों को क्रमशः रोनाल्ड स्टुअर्ट मैग्रेगर, अलेक्सेई पेत्रोविच वरान्निकोव, विद्यानिवास मिश्र व कवि प्रदीप सभागार का नाम दिया गया था। विश्व हिंदी सम्मेलन में चारों सभागारों को जिन विद्वानों का नाम दिया गया था, वे विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पहला सभागार रोनाल्ड स्टुअर्ट मैग्रेगर के नाम पर रखा गया था। न्यूजीलैंड में जन्मे व स्कॉटिश माता-पिता की संतान प्रो. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैग्रेगर ने सन 1959-60 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी की शिक्षा प्राप्त की व सन 1964-1997 तक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन कार्य करते रहे। प्रो. आर. एस. मैग्रेगर ने पश्चिम जगत को हिंदी से परिचित कराने व हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दूसरा सभागार जिसका नाम अलेक्सेई पेत्रोविच वरान्निकोव के नाम

पर रखा गया था। अलेक्सेई पेत्रोविच बरान्निकोव रूस देश के हिंदी विद्वान थे। इन्होंने रूसी भाषा में मानस का हिंदी अनुवाद करके भारत-रूस की सांस्कृतिक मित्रता को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तीसरे व चौथे सभागार जिन विद्वानों के नाम पर था उनसे शायद प्रत्येक भारतवासी परिचित हो। उत्तरप्रदेश के गोरखपुर में जन्मे विद्यानिवास मिश्र संस्कृत के प्रकांड विद्वान्, भाषाविद्, हिंदी साहित्यकार व सफल संपादक थे। भारत सरकार द्वारा इन्हें पद्म श्री व पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। कवि प्रदीप प्रसिद्ध कवि व गीतकार थे उनके द्वारा लिखा गया गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' तथा 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' जैसे देशभक्ति हिंदी गीतों ने भारतीयों के बीच में गहरी पैठ बनाई।

मुझे रोनाल्ड स्टुअर्ट मैग्रेगर सभागार में संचालित सत्र 'गिरमिटिया देशों में हिंदी' में सहभागिता करने का अवसर प्राप्त हुआ। सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेजों ने भारतीय मजदूरों को गुलामी की शर्तों पर विदेश जैसे फिजी, त्रिनिदाद एवं टोबेगो, मॉरीशस, सूरीनाम इत्यादि दक्षिण अफ्रीकी देशों में भेजना प्रारंभ किया, इन मजदूरों को ही गिरमिटिया कहा गया। ये मजदूर जहां-जहां गए, अपने साथ अपने देश की संस्कृति, भाषा, साहित्य भी उन देशों में ले गए। गिरमिटिया देशों से आए अतिथि वक्ताओं ने बताया कि उनके पूर्वजों ने कैसे विषम परिस्थितियों में अपनी भाषा व संस्कृतियों को संरक्षित किया। दिन भर की कठिन परिश्रम के बाद वे रात के समय रामायण, गीता, हनुमान चालीसा का पाठ किया करते। अपने बच्चों को वहां के विद्यालयों में इस डर से नहीं भेजते कि वे उन पर विदेशी भाषा, संस्कृति का प्रभाव न पड़ जाए। सत्र के दौरान गिरमिटिया देशों के वक्ताओं की भारत सरकार से यह अपेक्षा की कि भारत सरकार वहां के विश्वविद्यालयों में हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था कराए, हिंदी भाषा के योग्य शिक्षकों के साथ पाठ्य-सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जाए व गिरमिटिया देशों में हिंदी भाषा की दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना कराई जाए। सम्मेलन के दूसरे दिन अलेक्सेई पेत्रोविच बरान्निकोव सभागार में 'प्रशासन में हिंदी' विषय पर सत्र संचालन हुआ, जिसकी अध्यक्षता स्वयं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान कर रहे थे। इस सत्र के उपविषय "प्रशासनिक हिंदी शब्दावली की विशेषताएं, प्रशासनिक हिंदी : व्यवहारिक संदर्भ, प्रशासनिक गतिविधियां और राजभाषा का नीति निर्धारण, कार्यालयी हिंदी और अनुवाद की समस्या" रहे। मेरे द्वारा सहभागिता किए गए तीनों सत्रों में यह सत्र सर्वाधिक रुचिकर रहा। उपविषयों पर व्याख्यान के पश्चात उपस्थित कुल 51 सहभागियों ने अध्यक्ष महोदय व वक्ताओं को प्रशासन में हिंदी के कार्यान्वियन के लिए अपने सुझाव तो दिए ही, साथ ही उन्हें अपने प्रश्नों से भी रूबरू कराया, जिनमें से कतिपय महत्वपूर्ण सुझाव थे : प्रदेश स्तर पर तैयार किए जाने वाले दवाईयों के पैकट पर हिंदी में नाम लिखना, राजभाषा अधिकारियों को प्रशासनिक अधिकार प्रदान करना व उन्हें पदोन्नति के अवसर प्रदान करना, राजभाषा अधिनियम व नियम को निजी क्षेत्र के बैंकों में भी प्रभावी करना व इसके उल्लंघन करने वाले के लिए दण्डात्मक प्रावधान करना, वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट बनाते समय कर्मचारियों द्वारा हिंदी में किए गए कार्यों को ध्यान में रखना, राजभाषा कार्यान्वियन की प्रभावी निगरानी के लिए भाषा लोकपाल की नियुक्ति, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी भाषा के विकल्प के रूप में हिंदी भाषा के प्रश्न रखना, प्रशासन द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न अभियोग्यता/ प्रतियोगी परीक्षाओं, जहां निर्देश के रूप में लिखा होता है कि किसी भी विवाद की स्थिति में अंग्रेजी के प्रश्न ही मान्य होंगे, वहां ऐसी स्थिति को समाप्त करना, जिससे अनुवाद की उपयोगिता संभव हो सके। सत्र का समय पूर्व निर्धारित था, इसलिए अनेक सहभागी अपने विचार, सवाल मंच पर प्रस्तुत नहीं कर पाए। सम्मेलन के अंतिम दिन विभिन्न विषयों पर हुए सत्रों व विचार-विमर्श के आधार पर रिपोर्ट प्रस्तुत होनी थी लेकिन सत्र की अध्यक्षता कर रहे माननीय शिवराज सिंह चौहान जी ने अपने प्रदेश में हिंदी भाषा के कार्यान्वियन के लिए घोषणा उसी समय कर दी कि प्रदेश स्तर पर तैयार किए जाने वाले दवाईयों के पैकट पर हिंदी में लिखे जाएंगे, प्रदेश सरकार से केन्द्र को प्रेषित किए जाने वाले समस्त पत्र हिंदी में होंगे यदि आवश्यकता पड़ी तो ही उसका अंग्रेजी अनुवाद साथ में भेजा जाएगा किंतु मूल रूप से पत्र हिंदी में ही तैयार किए जाएंगे व समस्त

कर्मचारियों को मूलरूप से हिंदी में कार्य करने का आदेश जारी किया जाएगा।

दिनांक 12.09.2014 को समापन सत्र में मुख्य अतिथि गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह जी थे। उन्होंने लोकसभा चुनाव के एक वाक्य का जिक्र करते हुए कहा - "लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान देश के सुदूर पूर्व क्षेत्र नागालैण्ड में स्थानीय कार्यकर्ताओं के कहने पर जब मैं चुनावी रैली को अंग्रेजी में संबोधित कर रहा था तो वहां उपस्थित आम नागरिक हिंदी-हिंदी की आवाज लगाने लगे, मैं आश्चर्यचकित था। मैंने उनसे पूछा कि आपने हिंदी कहां से सीखी तो उनका जवाब था कि भारत के जवान जो वहां तैनात हैं, उनसे अक्सर वे बातें किया करते हैं साथ ही मीडिया का भी इसमें बहुत बड़ा योगदान रहा है, विभिन्न चैनलों के माध्यम से प्रसारित होने वाले हिंदी धारावाहिक, फिल्में देखकर उन्होंने बड़ी आसानी से हिंदी सीखी ली।" अंत में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के न रहने से गृह विदेश मंत्री श्री वी. के. सिंह जी ने मंच से विभिन्न सत्रों में हुए विचार-विमर्श के आधार पर हिंदी की समृद्धि व संरक्षण के लिए प्रस्ताव सर्व-सम्मति से अनुमोदन हेतु संबंधित विभागों को भेजने की घोषणा की जैसे:- भाषा लोकपाल की नियुक्ति, राजभाषा अधिकारियों को प्रशासनिक अधिकार व पदोन्नति, बैंक पी.ओ. की परीक्षा में अंग्रेजी भाषा के प्रश्न के स्थान पर हिंदी भाषा के प्रश्न उपलब्ध कराना, चिकित्सा व अभियांत्रिकी के पाठ्यक्रम हिंदी में तैयार करना, विधि के पाठ्यक्रम में लीगल लैंग्वेज का हिंदी संस्करण, हिंदी भाषा को रोजगार से जोड़ना इत्यादि। अंत में उन्होंने घोषणा की कि विदेश मंत्रालय एक विशेष समीक्षा समिति गठित कर पारित प्रस्ताव को अनुशंसाओं के साथ विभिन्न मंत्रालयों व विभागों को अग्रेषित करेगा। इसके अतिरिक्त 11 वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन वर्ष 2018 में मॉरीशस में किया जाएगा, जहां विश्व हिंदी सचिवालय के नए भवन का औपचारिक उद्घाटन भी किया जाएगा।

आज की दो महत्वपूर्ण समस्याएं हैं - भ्रष्ट आचरण और फिरकापरस्ती। भ्रष्टाचार का दानव जन-मन का शासन में विश्वास खंडित कर रहा है तो फिरकापरस्ती भारत माँ के आंचल को उन्हीं के बच्चों के रक्त से सींच रही है। पहली समस्या के कई कारणों में से एक मौलिक कारण है पारदर्शिता का अभाव और इसकी समस्या के मूल में है परस्पर सार्थक संवाद का अभाव। दोनों की जननी है राष्ट्रवाद के पवित्र संकल्प के स्थान पर स्वार्थ, लिप्सा और उपराष्ट्रीयता का आरोपण। हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग से उपराष्ट्रीयता विलोपित होगी। पारदर्शिता और शासनिक प्रकोपों के प्रति जन-मानस ज्यादा चैतन्य होगा और सार्थक संवाद भी होगा। अब हिंदी की प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से इसकी तर्कसंगतता स्वयमेव सिद्ध हो जाएगी। आशा है कि मध्यप्रदेश की धरती से ही इस पावन यज्ञ का आह्वान हो और हो भी क्यों न। मध्यप्रदेश भवभूति और कालिदास का प्रदेश है। माँ भारती की इस पूज्य भाषा के लिए कितना कुछ कहा गया। समाज में पूरे राष्ट्र की एक भाषा बनकर समाज को जोड़ने वाली हिंदी को श्रृंगार की नहीं, स्नेह की जरूरत है, सबके द्वारा अपनाने की जरूरत है और अनिवार्यता भी है। बात तो तब बने जब जन-गण हिंदी को अपने दैनिक व कार्यालयीन व्यवहार में भाषा के रूप में स्वीकार करें व राष्ट्र की नींव मजबूत हो। हिंदी की समृद्धि के लिए आवश्यक है कि संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी का प्रसार व विकास किया जाए, विद्वज्जन साहित्य व शब्दकोश की रचना करें तथा आम जन इसका अधिकाधिक प्रयोग करें।

- आँचलिक कार्यालय, भोपाल

दिलो में जिंदा रहेंगे कलाम

अरविंद कुमार

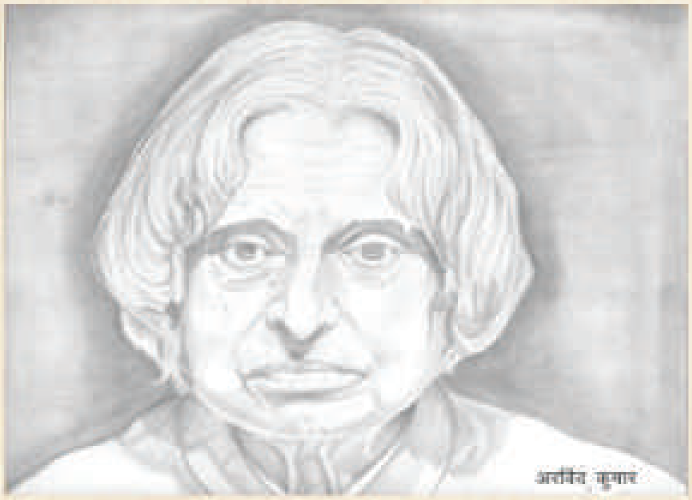

सपना वह नहीं जो तुम सोते हुए देखते हो, सपना वह है जो तुम्हें सोने न दे। जी हाँ डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के ये अलौकिक बोल उतने ही सत्य हैं जितना कि श्रीमद भगवद् गीता का यह श्लोक :

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।''

और जिसकी प्रमाणिकता की किरण आज से 83 साल पहले तमिलनाडु के रामेश्वरम के एक मध्यवर्ग के मुस्लिम परिवार में चमका था। छोटे कलाम ने रामेश्वरम के आसमान में जब बिखरे इन्द्रधनुष के बीच से भारत रूपी तीर को धरती के कमान से छूटते देखा था तब उनके ख्यालात में और भी कुछ ऐसे सपने थे जो जीवंत रूप लेने के लिए उनके मस्तिष्क के चरखे पर बुने जा रहे थे। कुछ सपनों ने कलाम के जीवन में आकार तो ले लिए लेकिन कुछ सपने अधूरे रह गए। कलाम एयरफोर्स पायलट बनना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने वायुसेना में इंटरव्यू दिया। दुर्भाग्यपूर्ण कुल रिक्तियों की संख्या आठ थी और कलाम साहब का नंबर नौवा आया और इस तरह कलाम का एयरफोर्स पायलट बनने का सपना अधूरा रह गया। लेकिन उन्होंने अपने जज्बे की लौ को धीमा न होने दिया। उन्होंने रॉकेट विज्ञान में नई तकनीक और उपलब्धियाँ हासिल की और इसी का नतीजा है कि दुनिया आज मिसाइल और रॉकेट विज्ञान में भारत का लोहा मानती है। उनका कहना था कि सपना देखोगे तभी पूरे भी होंगे और यही कारण है कि लड़ाकू विमान सुखोई में बैठ कर आसमान की ऊँचाईयों तक पहुँचने वाले वह भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने तथा ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया।

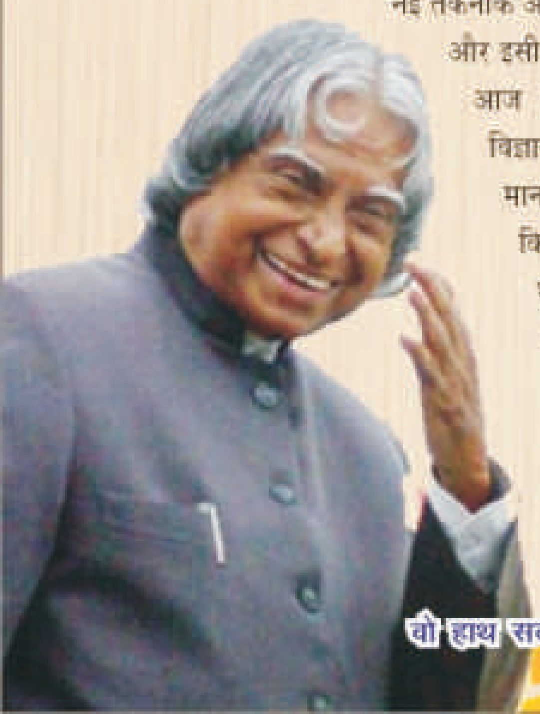

डॉ. अब्दुल कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन.डी.ए. घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था। जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। 18 जुलाई 2002 को डॉ. कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत द्वारा भारत का राष्ट्रपति चुना गया था। इसके बावजूद भी उनके ज़ेहन में कभी गुरूर नहीं आया जैसा कि आम राजनैतिक व्यक्तियों में देखा जाता है। उनके जीवन की कई कहानियां है जो उनके शालीनता और जमीन से जुड़े रहने का एहसास कराती हैं। राष्ट्रपति के रूप में मिलने वाली मासिक वेतन को वह "पूरा" नामक एक ट्रस्ट को दान कर देते थे जो कि पूरे देश में ग्रामीण इलाको के उत्थान के कार्य में जुटा है। कलाम साहब का कहना था कि मैं देश का राष्ट्रपति हूँ इसलिए मेरा ध्यान सरकार रखती है तो धन बचाने से क्या होगा, अच्छा है यह किसी की भलाई के काम आ जाए। उन्होंने अपने परिवार के लिए कुछ बचा कर नहीं रखा। एक बार एक स्कूल कार्यक्रम में कलाम साहब को चार सौ बच्चों के बीच भाषण दे रहे थे कि अचानक बिजली गुल हो गई। जब तक स्कूल के स्टाफ इसके समाधान में कुछ कर पाते, कलाम साहब ने बच्चों के बीच जा कर अपनी बुलंद और ऊर्जाशील आवाज़ से बच्चों को संबोधित किया

वो हाथ सदा पवित्र होते हैं जो प्रार्थना से अधिक सेवा के लिए उठें।

और एक-एक प्रश्न का उत्तर दिया।

डॉ कलाम का दर्शन सिद्धांत बेहद ही प्रभावशाली हैं। आईए उनके कुछ दर्शन सिद्धांतों पर हम नज़र डाले।

- आविष्कार करने की हिम्मत होनी चाहिए। आविष्कार करो जो दूसरा नहीं कर पा रहा। उसे करने की हिम्मत रखो। कोई भी काम मैं ही कर सकता हूँ। दूसरों के ऊपर काम को डालने या टालने से वो कभी ठीक नहीं होगा।
- अगर भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन सदस्य यह कर सकते हैं, माता, पिता और गुरु। यदि हम स्वतंत्र नहीं हैं तो कोई भी हमारा आदर नहीं करेगा।
- आसमान की तरफ देखिए हम अकेले नहीं हैं पूरा ब्रह्मांड हमारा दोस्त है और वो उन्हीं का साथ देता हैं जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं। आपका सपना सच हो, इससे पहले आपको सपना देखना होगा।
- जीवन एक मुश्किल खेल है। आप इंसान होने के जन्मजात अधिकार को बरकरार रखते हुए ही इसे जीत सकते हैं। इंसान को मुश्किलों की जरूरत पड़ती है क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये मुश्किलें बहुत जरूरी है। जो लोग मन से काम नहीं करते उन्हें जो सफलता मिलती है, वो खोखली और आधी अधूरी होती है जिससे आपस में कड़वाहट फैलती है।

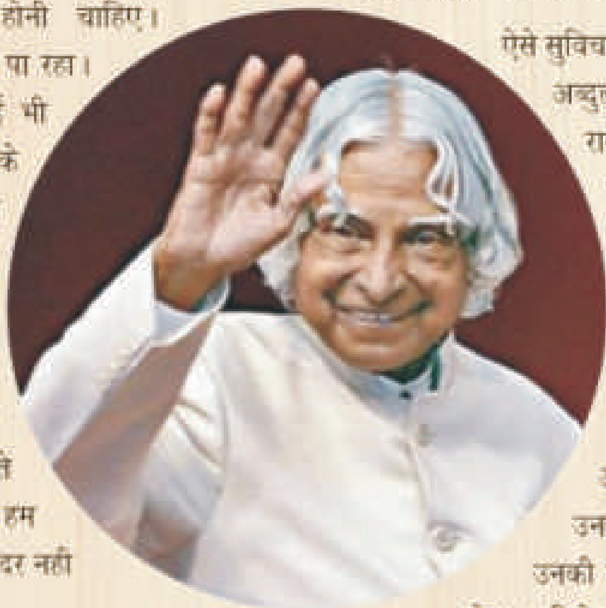

ऐसे सुविचारों की लौ जलाने वाले डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम कि अंतिम विदाई का मंज़र, रामेश्वरम की पाक धरती कभी नहीं भूल पाएगी। 30 जुलाई 2015 को तिरंगे में लिपटे हुए कलाम साहब के पार्थिव शरीर को अंतिम बार रामेश्वरम की मिट्टी पर रखा गया। यहीं से 83 साल पहले कलाम ने अपने सपनों का सफर अकेले शुरू किया था। लेकिन आज उनके आखिरी सफर में लाखों लोग उनकी एक झलक पाने के लिए बेताब थे। नेता, अभिनेता सभी ने उनके सजदे में सर झुकाया जिसे दुनिया 'मिसाईल मैन' के नाम से भी जानती है।

कलाम साहब का सोचना था कि संकीर्ण-तुच्छ लक्ष्य की लालसा करना पाप है, मेरे सपने बड़े हो, मैं मेहनत करूँगा, मेरा देश महान हो, धनवान हो गुणवान हो। कहीं भी धरती पर इसके ऊपर या नीचे दीप जलाए रखूँगा, जिससे मेरा देश महान हो। यदि यह सोच हम में समा सकी तो यकीन मानिए "दिलों में ज़िंदा रहेंगे कलाम"।

- प्रधान कार्यालय, जोखिम प्रबंधन विभाग

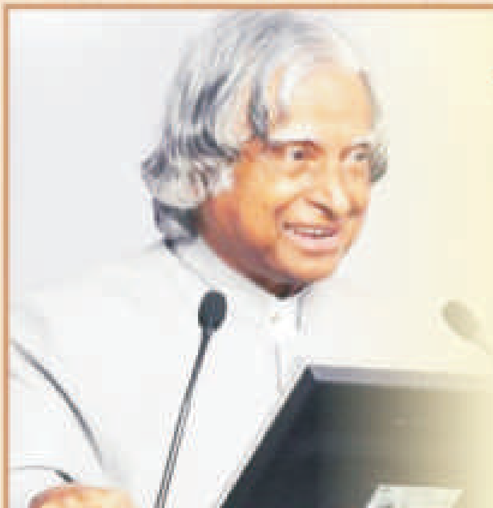

जीवन में कठिनाइयाँ हमें बर्बाद करने नहीं आती हैं, बल्कि ये हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकालने में हमारी मदद करती हैं, कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।

- डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

बैंक की आशा : बढ़े 'कासा'

पीयूष कांत चतुर्वेदी

पृष्ठभूमि :

प्रतिस्पर्धा के अभूतपूर्व व जोखिमभरे दौर से गुज़र रही है, विश्व की समूची अर्थव्यवस्थाएँ। अभूतपूर्व इसलिए कि शायद ही इतिहास में कभी इतनी गला काटने वाली होड़ रही हो और जोखिमपूर्ण इसलिये कि ये होड़ विक्रेता को चाहे वह सामान विक्रय करता हो या सेवा, इस बात के लिये बाध्य कर रही है कि यदि व्यवस्था में रहना है तो अपना लाभांश कम करे, ग्राहक को श्रेष्ठ सेवा प्रदान करे वो भी तत्काल। ऐसे में जोखिम बढ़ना अवश्यंभावी है। ऐसी परिस्थिति में भला बैंक भी अछूते कहां रह सकते हैं? और बैंक तो सेवा क्षेत्र में है और उनमें भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक जिनको अनेक मापदण्डों, अर्हताओं, सरकार द्वारा निर्धारित मानकों और अनिवार्यताओं का कार्यान्वयन करने की बाध्यता भी है और उस पर अंतर्राष्ट्रीय बैंकों का देश में बढ़ता प्रसार, तकनीकी रूप से विकसित निजी क्षेत्र की बैंकों का शहरी-अर्धशहरी शाखाओं का बढ़ता जाल और हाल ही में घोषित कुछ और विशिष्ट बैंकों का उदय! ये तो उस विश्वव्यापी बृहद स्पर्धा के कुछ बिंदु मात्र है जिन्हें हम जमीनी-लड़ाई कह सकते हैं लेकिन जिन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको को आज पंजे पर लाकर खड़ा कर दिया और अपने लाभ के लिए संघर्ष करने पर बाध्य कर दिया है और बैंक येन-केन प्रकारेण इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में अपनी लाभप्रदता बनाए रखने के लिए तरह-तरह के उपाय ढूंढ़ रही हैं। इन उपायों में कुछ परम्परागत है, कुछ नवीन है, और कुछ आधुनिक तकनीक से उभर कर आए हैं। इन परम्परागत उपायों को अर्जित देय ब्याज का अंतर बढ़ाना, अनर्जक आस्तियों को न्यूनतम स्तर पर रखना, परिचालन में मितव्ययता आदि उपाय आते हैं, लेकिन एक बुनियादी उपाय भी हैं - प्राप्त राशियों पर न्यूनतम ब्याज देय हो या शून्य ही हो अर्थात् बिना ब्याज के बैंक के पास अधिक से अधिक राशि आ जाए (जैसे कि चालू खाते में) ताकि उसे ऋण के रूप में देकर अधिकतम ब्याज के रूप में लाभ कमाया जा सके। या कम से कम ब्याज देने पर अधिकतम राशि मिल सके, जैसे कि बचत खाते में। चालू खाता यानि कि करंट एकाउंट और बचत खाता यानि कि सेविंग बैंक खाता और इन दोनों को जोड़ कर बना है "कासा"। एक मुहावरे की तरह सब बैंकों के फंड पर चढ़ा है "कासा"

क्या है "कासा"?:

इस पृष्ठभूमि में ये लेख प्रयास, कासा को समझने उसके महत्व को जानने और उसे बढ़ाने की चुनौती के लिये विचार करने का।

अंक गणित के मान से कासा-चालू खाते व बचत खाते में जमा राशियों के योग का उस बैंक की कुल जमा राशियों का अनुपात है जिसे सुविधा या समझ के लिये प्रतिशत में दर्शाया जाता है यथा:

$$\text{कासा (\%)} \quad \frac{\text{चालू खाते में जमा + बचत खाते में जमा}}{\text{बैंक में कुल जमा राशियां}} \times 100$$

अर्थात् किसी बैंक में प्रति सौ रूपये यदि चालू खाते में 20 रुपये व बचत खाते में 40 रूपये जमा है तो उसका कासा साठ प्रतिशत गिना जाएगा। इस साठ रुपये को बैंक ऋण के रूप में देकर ब्याज अर्जित करता है। स्वभाविक रूप से ये राशि जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक उसकी लाभप्रदता होगी।

कासा के लिए कदम :

चालू खाते अधिकतर व्यापार-व्यवसाय संबंधी लेन-देन के लिए होते है। आर्थिक नियमन व अनिवार्यताओं ने ऐसे खातों का खोलना व उनका सुचारू परिचालन करना आवश्यक बना दिया है। चूंकि ऐसे खातो में कोई ब्याज देय नहीं होता है, अतः ये प्रत्येक बैंक की प्राथमिकता है। नए-नए खाते खोलना, पुराने ग्राहकों को संतुष्टि देना, बैंक से जोड़े रखना और ऐसे ग्राहक जो पूर्व में बैंक के साथ थे लेकिन

कदाचित् आज बैंक से लेन-देन नहीं कर रहे है, उन्हें पुनः बैंक में लाना बैंक की लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं।

दूसरी तरफ बचत खाते हैं जो मध्यम वर्ग के ग्राहक विशेष रूप से अपनी बचत बनाए रखने के लिए या उनके संवर्धन के लिए खोलते हैं, उनमें अमूमन 3.5 प्रतिशत ब्याज देय होता है। चूंकि अब इनके ब्याज देयता के नियमों में परिवर्तन किया गया है और अब ब्याज के गणन में माह के प्रत्येक दिन का अंतिम बैलेंस लिया जाता है। अतः ग्राहक उससे आकर्षित हुआ है और वह अधिकतम राशि अपने बचत खाते में रखकर संतुष्ट है, जन-धन योजना के माध्यम से अनेकानेक खाते खोले गए हैं, ताकि आम जन का भी बैंकों के प्रति विश्वास बढ़े, बैंकों में खाता परिचालन करने की झिझक समाप्त हो, और अनपढ़ या कम पढ़ा लिखा सुदूर गाँवों में बसने वाला व्यक्ति भी बैंकिंग सेवाओं का लाभ ले सके, ऐसा कारगर प्रयास भी बैंकों द्वारा किया गया जो एक विश्व रिकॉर्ड और एक मिसाल है।

कुछ उपाय : कुछ सुझाव :

1. तो कैसे बढ़ाया जाए कासा? प्रतिस्पर्धात्मक बैंकिंग के इस दौर में हम निम्न उपायों पर विचार कर सकते हैं। ग्राहकों तक आधुनिक तकनीक का पूरा लाभ पहुँचाना और लेन-देन की व्यवस्था को पूर्णतः सुरक्षित बनाते हुए, उसे सरल और ग्राहक के लिये सुलभ बनाना एक अनिवार्यता है। उसके लेन-देन के व्यावसायिक-आंकलन के आधार पर न्यूनतम सेवा शुल्क रखना आवश्यकता है।

2. ऐसी परिस्थिति में, विशेष रूप से भारत के संदर्भ में यदि ऑन-लाइन लेन-देन को आंग्ल भाषा के अलावा हिंदी एवम् आंचलिक भाषा में भी उपलब्ध करा दिया जाए तो उन्हें अधिक सुगमता और सुविधापूर्ण अनुभव होगा, बैंक की ओर उनका आकर्षण बढ़ेगा और उसी हिसाब से खाते में जमा राशि भी। देखने में यह मुश्किल लग सकता है लेकिन चीन, रूस, जापान आदि के उदाहरण हमें प्रेरणा दे सकते हैं और यही समय इसके लिए अनुकूल भी है।

3. बैंकों ने जन-धन योजना में सुदूर इलाके में बसे अंतिम व्यक्ति को भी बैंक-व्यवस्था व प्रणाली से जोड़कर सराहनीय कार्य किया है परंतु अभी समय पसीना सुखाने का नहीं बल्कि फल पाने के प्रयास का है। बैंकों को शून्य राशि वाले खातों में राशि जमा करवाने या बढ़ाने के लिये ग्राहक से निरंतर संपर्क रखना होगा, विश्वास जीतना होगा और अपनी व्यवस्था को ग्राहक के लिए सहज व पारदर्शी बनाना होगा।

4. बैंकिंग व्यवस्था एक ऐसी अवस्था में है, जहाँ ग्राहक बैंक में आने में समय व्यर्थ नहीं करना चाहता क्योंकि वह भी एक प्रतिस्पर्धात्मक व्यवस्था में कार्य कर रहा है, उसकी अपेक्षा भी यही होती है कि संपूर्ण बैंकिंग, सुविधा उसके कार्यस्थल पर ऐसे उपलब्ध हो कि वह बैंकिंग चैनल के इस्तेमाल की अनिवार्यता पूरी करते हुए भी घर बैठे सुगमता से अपने लेन-देन का परिचालन कर सके। बैंकों को अधिकतम ग्राहकों तक ऐसी व्यवस्था प्रणाली पहुंचाना ही होगा।

5. उपरोक्त प्रतिस्पर्धा के रहते ग्राहक यह भी चाहता है कि भले ही उसका चालू खाता हो पर उसमें वो ज्यादा से ज्यादा राशि रख भी सकता है, यदि उसे कुछ ब्याज या आय हो और उसके प्रतिष्ठान का लाभ बढ़ सके। यानि खाते में तरलता भी बनी रहे और अतिरिक्त तरलता पर बैंक निश्चित राशि के ऊपर ब्याज भी देता रहे, ताकि उसे अधिकतम लाभ मिल सके।

6. आप सहमत होंगे कि उपभोक्ता प्रधान व्यवस्था के इस दौर में ''कस्टमाईज्ड प्रॉडक्ट'' यानि कि ग्राहक की आवश्यकतानुसार अपनी उत्पाद सेवा प्रदान कर पाए और ''कम्प्लीट पैकेज डील'' यानि एक प्रतिष्ठान को वो सब चीजें सुविधानुसार उपलब्ध कराना। अभिप्राय यह कि एक ही व्यवस्था में हम उस प्रतिष्ठान का चालू खाता भी रखें, उसके कार्मिकों के वेतन-खाते भी रखें

उन्हें ऋण भी प्रदान करते रहें, राशि अंतरण, बिल भुगतान आदि निश्चित दिनांक व समय पर कर सके आदि।

7. कुछ बैंकों ने अपने जमाकर्त्ताओं को आकर्षित करने के लिये उनकी जीवन बीमा, जमा-बीमा, दुर्घटना बीमा आदि की योजनाएं भी प्रेषित की हैं ताकि ग्राहक आकर्षित हो।

उपसंहार :

उपरोक्त उपाय महज बानगी है। कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। एक तैराक को ही पता होता है कि समंदर कितना गहरा है, लहरों का उछाल क्या है, दबाव क्या है और हवा का बहाव क्या है।रास्ता ढूंढने पर मिल भी जाता है, किसी शायर की दो पंक्तियां उल्लेखित कर रहा हूं :

"हम तो दरिया हैं, अपना हुनर जानते हैं,
जिस तरफ भी जाएंगे, रास्ता मिल जाएगा।"

'कासा' यदि समय की मांग है, हमारी विकास यात्रा का महत्वपूर्ण कारक है, तो हरेक प्रबंधक स्वयं भी उपाय खोज सकता है, और उदाहरण के तौर पर रख सकता है। इस के महत्व को स्वीकारते हुए ही हमारे प्रबंधन ने इसकी वृद्धि के लिए बल दिया है। हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी ने वित्तीय वर्ष 2015-2016 के लिए इसे एक नारे के रूप में दिया है जिसे हम एक चुनौती के रूप में स्वीकारते हुए, अपनी लक्ष्य प्राप्ति को अभियान बना सकते हैं। साधारण से असाधारण होने का उदाहरण रख सकते हैं।

दुष्यंत जी ने लिखा था :

"कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो"।।

- प्र.का. सरकारी व्यवसाय विभाग, नई दिल्ली

हमें इन पर गर्व है

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर श्री गुलज़ार सिंह, कैबिनेट मंत्री, पशुपालन विभाग, पंजाब द्वारा बैंक में पेंशन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने के लिए श्री कुलवंत सिंह, मुख्य प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, गुरदासपुर को सम्मानित करते हुए।

नराकास गतिविधियाँ

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित 42वीं छमाही बैठक के दौरान अधिकारियों को संबोधित करते महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा। चित्र में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव, श्रीमती पूनम जुनेजा, निदेशक श्री हरिंदर कुमार तथा नराकास सचिव श्री प्रेम कुमार शर्मा भी दिखाई दे रहे हैं।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'ग्राहक सेवा में वाणी की महत्ता' विषय पर व्याख्यान देते प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली। संगोष्ठी में सभी बैंकों के उच्चाधिकारियों तथा राजभाषा अधिकारियों ने सहभागिता की।

आंचलिक कार्यालय, भोपाल के राजभाषा विभाग द्वारा 'बैंकिंग परिप्रेक्ष्य में ग्राहक संवाद' विषय पर विशेष सत्र का सफल आयोजन।

सी.बी.आर.टी. चंडीगढ़ द्वारा निव्सकॉम, नोएडा में हिंदी कार्यशाला एवं यूनिकोड प्रशिक्षण का विशेष सत्र का आयोजन किया गया।

हिचक छोड़ें, हिंदी बोलें

हरप्रीत कौर

हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। यह मात्र एक दिन नहीं बल्कि यह अपनी मातृभाषा को सम्मान दिलाने का दिन है। उस भाषा को सम्मान दिलाने का दिन जिसे लगभग तीन चौथाई हिन्दुस्तान समझता है, जिस भाषा ने देश को स्वतंत्रता दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उस हिंदी भाषा के नाम यह दिन समर्पित है जिस हिंदी ने हमें एक दूसरे से जुड़ने का साधन प्रदान किया। लेकिन क्या हिंदी मर चुकी है या यह इतने खतरे में है कि हमें इसके लिए एक विशेष दिन समर्पित करना पड़ रहा है?

आज "हिंदी दिवस" जैसा दिन एकमात्र औपचारिकता बन कर रह गया है। लगता है जैसे लोग गुम हो चुकी अपनी मातृभाषा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं वरना क्या कभी आपने चीनी दिवस या फ्रेंच दिवस या अंग्रेजी दिवस के बारे में सुना है? हिंदी दिवस मनाने का अर्थ है गुम हो रही हिंदी को बचाने के लिए एक प्रयास।

हिंदी हमारी मातृभाषा है। जब बच्चा पैदा होता है तो वह पेट से ही भाषा सीख कर नहीं आता। भाषा का पहला ज्ञान उसे आस-पास सुनाई देने वाली आवाजों से प्राप्त होता है और भारत में अधिकांश घरों में बोलचाल की भाषा हिंदी ही है।

"हिंदी में शक्ति है, सामर्थ्य है, आकर्षण है, असर है।

कमी तो हिंदी भाषियों में है - आत्मविश्वास की और अपनी भाषा में विश्वास की"

आज देश में हिंदी के सैकड़ों न्यूज़ चैनल और अखबार आते हैं लेकिन जब प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान की बात होती है तो उनमें अव्वल दर्जे पर अंग्रेज़ी चैनलों को रखा जाता है। बच्चों को अंग्रेज़ी का विशेष ज्ञान दिलाने के लिए स्कूलों में अंग्रेज़ी के अखबार बंटवाए जाते हैं। आज जब युवा पढ़ाई पूरी करके इंटरव्यू में जाते हैं तो अक्सर उनसे एक ही प्रश्न पूछा जाता है कि क्या आपको अंग्रेज़ी आती है? बहुत कम जगह है कि क्या हिंदी के ज्ञान की बात करते हैं। बात सिर्फ शैक्षिक संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। जानकारों की नज़र में हिंदी की बर्बादी में सबसे अहम रोल हमारी संसद का है। भारत आज़ाद हुआ तब यह दर्जा नहीं दिया गया बल्कि इसे मात्र राजभाषा बना दिया गया। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के तहत यह कहा गया कि सभी सरकारी दस्तावेज़ और निर्णय अंग्रेज़ी में लिखे जाएंगे और साथ ही उन्हें हिंदी में अनुदित किया जाएगा। जबकि होना यह चाहिए था कि सभी सरकारी आदेश और कानून हिंदी में ही लिखें जाने चाहिए और जरूरत होगी तो उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाएगा।

जाहिर है, कमी भाषा में नहीं स्वयं को हिंदी भाषी कहने वालों में है और यह कमी ज्ञान या जानकारी की नहीं है, कमी है, आत्मविश्वास की और अपनी भाषा पर विश्वास की। हम शब्द जानते हैं पर बोलने से पहले इस संशय में पड़ जाते हैं कि सामने वाले को समझ आएगा कि नहीं। मन में यह गलतफहमी बैठ गई है कि "शिक्षा" कठिन शब्द है किंतु 'एजुकेशन' सरल। करोड़ों हिंदुस्तानी हिंदी में सुशिक्षित उच्च शिक्षित हैं किंतु जब कहीं आवेदन की बारी आती है तो सोच-सोच कर चार-छः पंक्तियां कामचलाऊ अंग्रेज़ी की लिखते हैं।

भारत में ऐसा कोई नहीं, जो हिंदी से पूरी तरह अनजान हो या हिंदी उसके पल्ले न पड़े। डरकर अपनी भाषा को कृत्रिम न बनाएं। उसे खिचड़ी का रूप न दें।

कोई खड्ग इतना नहीं काटता, जितना व्यंग्य - सर पी सिडनी

जान-बूझकर उसमें अंग्रेज़ी शब्द न मिलाएं जिनके हिंदी स्थानापन्न बड़े आराम से समझे जाते हैं। अपने कामकाज और व्यवहार के लिए हम परायी भाषा पर आश्रित क्यों रहें?

करोड़ों हिंदुस्तानी जो हिंदी से प्रेम करते हैं वे सबकुछ कर सकते हैं। वे अपना सामान्य कामकाज करते हुए भी हिंदी आंदोलन चला सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि जो जहां है, वहीं अपना कार्य और व्यवहार हिंदी में करे।

- अपने पारिवारिक निमंत्रण, सामाजिक और धार्मिक आयोजनों के आमंत्रण-निमंत्रण हिंदी में ही छपवाएं।
- हिंदी में पत्र लिखें, लिफाफे पर पता भी देवनागरी हिंदी में ही लिखें। अंग्रेज़ी पत्रों के जवाब भी हिंदी में दें।
- खरीददारी या अन्य कारोबारी कामों की पावती रसीद तथा अन्य कागज़ात हिंदी में छपवाएं।
- आवेदन पत्र हिंदी में लिखें। बैंक, रेलवे आदि के प्रपत्र हिंदी में भरें।
- जो अपने विषय के विशेषज्ञ हैं, वे विदेशी भाषा की स्तरीय पुस्तकों का अनुवाद हिंदी में करें या हिंदी में पुस्तकें रचें।
- संकल्प के साथ सारे काम स्वभाषा में शुरू कर दें।

बस यह समझने की आवश्यकता है कि हिंदी भाषा सबको आपस में जोड़ने वाली भाषा है। इसका प्रयोग हमारा संवैधानिक और नैतिक दायित्व है। अगर आज हमने हिंदी को उपेक्षित करना चालू कर दिया तो कहीं ऐसा न हो कि एक बदलाव की जरूरत सर्वप्रथम स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों से होनी चाहिए। साथ ही देश की संसद को भी मात्र हिंदी पखवाड़े में मातृभाषा का सम्मान नहीं बल्कि हर दिन इसे ही व्यवहारिक और कार्यालय की भाषा बनाना चाहिए। अतः आप भी अपनी जिम्मेदारी को पहचानें। '**पूरे दम से हरदम हिंदी**' का संकल्प लें।

- आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

पाठकों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' पत्रिका का विगत दो दशकों से सफल प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, बैंकिंग, कंप्यूटर एवं मानव-संसाधन से जुड़े लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, कविता, गज़ल का प्रकाशन किया जाता है। स्टाफ़-सदस्यों के बच्चों को प्रेरित करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धियां, स्कैच, पेंटिंग को भी यथोचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसे बहु-आयामी, प्रेरक और प्रोत्साहन माध्यम बनाने के लिए सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है। राजभाषा विभाग में आपके मूल लेख, कविता, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य संपादक

पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का. राजभाषा विभाग

21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

व्यंग्य

जज़्बातों की तिजारत....

पवन कुमार जैन

आज बड़े दिनों के बाद अपने पुत्तीभाई काफी बड़े और भरे हुए झोले के साथ दिखाई दिए। झोले के बोझ ने कंधे को कमान की तरह एक तरफ झुका दिया था। बिना दुआ सलाम के उन्होंने अपने कंधों को आराम देने के लिहाज से झोले को मेज पर अड़ा दिया और अपने मासूम से कंधों को सहलाते हुए मुझ पर बरस पड़े। अमां तुम कुछ नहीं कर सकते सिवाय कलम घिसने के। दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई और एक तुम हो जो अभी भी कलम-दवात पर अटके हुए हो। कुछ बदलाव लाओ अपने में, कुछ नया करने की सोचो। मेरी काफी लानत-मलामत कर डाली पुत्तीभाई ने। मैं बिना वजह ही चुपचाप अपनी इज्जत नीलाम करवा रहा था। जलील सा चेहरा लिए हुए मैंने उनकी तरफ कुर्सी बढ़ाई। हाँफते हुए पुत्तीभाई बिना हत्थे की कुर्सी में फिट हो गए। और चाय-समोसा हाजिर करने का फरमान जारी कर दिया। पुत्तीभाई के जो हालात दिख रहे थे और जिस तेवर में वह पेश आए थे, उनको देखते हुए मना करने की कोई गुँजाईश तो थी ही नहीं। दो साबुत समोसे, कटोरी भर चटनी और एक प्याला चाय निबटाने के बाद उन्होंने बड़ी बेहयाई के साथ मुँह खोलकर डकार ली। उनका गुस्सा समोसे-चाय के साथ हजम हो चुका था। अब वह मुद्दे पर आते हुए बोले, मियाँ तुम टीवी की बहसों में क्यों नहीं शामिल होते। कलम घिसने से कुछ मयस्सर न होगा। सुना है इन बहसों में शिरकत करने वालों की तूती बोलती है। चैनल वालों के साथ-साथ दर्शक भी उन्हें हीरो मानते हैं। दिन भर यहाँ बैठकर आसमान ताकते रहते हो। बहसों में जाने पर मशरूफियत बढ़ जाएगी और चार पैसे भी नसीब होंगे। कम से कम दोनों वक्त चूल्हा तो जलेगा।

मैंने राजधानी एक्सप्रेस पर थोड़ा ब्रेक लगाते हुए कहा - मगर टीवी पर तो काफी हैंडसम और लिपे-पुते लोग आते हैं। मुझ जैसे खबीसों को कौन पूछेगा। पुत्तीभाई धंसी हुई आँखों से घूरने के अंदाज में बाहर निकालने की बेवजह कोशिश करते हुए बोले - कुछ करो मियाँ। जुगाड़-शुगाड़ करो कितने कलम नवीसों को जानते हो। हमेशा उबाऊ और फलसफाई मसखरा करने से बेहतर है कि कुछ काम की बात करो। तुमने टीवी पर देखा एक ही बंदा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सभी समस्याओं पर किस तरह बोलता है। लगता है कि इस बहस के बाद अब कोई समस्या बाकी ही नहीं रह जाएगी। सामने वाले की बात काटने के लिए क्या सालिड तर्क देता है। पूरा ड्रामा करता है। भरतमुनि के नाट्य शास्त्र का पूरा ज्ञान इन बहसों में दिखाई देता है। कभी-कभी तो जूतम पैजार भी शुरू हो जाती है। हर इंसान के अंदर बसे जानवर बाहर आकर गुल्ली-डंडा खेलने लग जाते हैं। जितनी ज्यादा उत्तेजना, उतना ज्यादा पैसा। भाड़ में जाए जनता और जनता से जुड़े सरोकार। तुम तो पढ़े लिखे हो। ऐसे-ऐसे सीन डालो कि आग लग जाए। सामने वाले को नीचा दिखाने की हर कोशिश करो, और इस कोशिश में ऐंकर भी तुम्हारा पूरा साथ देगा। लोग टीवी से चिपककर बिना वजह के मुद्दों पर भी वजह तलाश करने लगेंगे। ऐंकर जब देखेगा कि उत्तेजना नहीं बन रही तो वह जोर-जोर से चिल्लाकर अपने मुँह की बात तुम लोगों के मुँह में डालने की कोशिश करेगा। लो जी लग गई आग। आपके एक-एक अल्फाज ब्रेकिंग न्यूज में तब्दील हो जाएंगे। उस एक-आधे घंटे के प्रोग्राम में चैनल वाले लाखों के वारे-न्यारे कर देंगे और इन लाखों में कुछ खुरचन तुम्हें भी मिल जाए तो क्या बुरा है। कम से कम दालान में सालों बाद चूने से पुताई तो हो जाएगी। ठंडे पड़े चूल्हे में दोनों वक्त गरमाहट तो रहेगी।

पुत्तीभाई की जज्बाती तकरीर और ख्यालात से मैं चेतनाशून्य होता जा रहा था। कानों ने सुनना बंद कर दिया था। सोच की सुई बस एक ही जगह अटक गई थी। क्या हम इतने कमर्शियलाईज हो गए हैं कि अब जज्बातों को सरेआम और सरेशाम नीलाम करने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। हम एक आम शहरी होने के फर्ज से भी दूर हो गए हैं। मैंने पुत्तीभाई के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा कि - मियाँ मैं, मेरे बारे में आपके जज्बातों की इज्जत करता हूँ पर क्या जरूरी है कि अपने हलक में रोटी डालने के लिए दूसरों के हलक तराशे जाएं। मैं इसलिए लिखता हूँ कि लोग तालीमयाफ्ता हों। उन्हें खुशी मिल सके। इसलिए नहीं कि इंसान ही इंसान का दुश्मन बन जाए। बेशक मेरे घर का चूल्हा ठंडा है और दालान में सफेदी नहीं हुई है, मगर मेरा खून न तो ठंडा हुआ है और न ही सफेद हुआ है। पुत्तीभाई कुछ नहीं बोले। चुपचाप अपना थैला उठाया और इस बार दूसरे कंधे पर रखकर आगे बढ़ गए।

- आंचलिक कार्यालय, मुम्बई

मन की शांति अमूल्य है। इसका मूल्य अथाह संपत्ति से भी अधिक है - डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हिंदी दिवस समारोह

प्रधान कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का आंकलन करते हुए (बाएं से) श्री दीन दयाल शर्मा, श्री दीपक मैनी, महाप्रबंधक, श्री जी. एस. भाटिया, मुख्य महाप्रबंधक, श्री एम. जी. श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री वीरेन्द्र गुप्ता, महाप्रबंधक।

श्री दीन दयाल शर्मा, महाप्रबंधक (राजभाषा) सहभागियों को संबोधित करते हुए।

हिंदी दिवस समारोह में प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का संचालन करती हुई डॉ. नीरू पाठक तथा बैंक अधिकारी श्री सुरेन्द्र सिंह, सामान्य प्रशासन विभाग, पुरस्कार प्राप्त करते हुए। साथ में है श्री त्रिलोचन सिंह, प्रबंधक (राजभाषा)।

गीत गायन प्रतियोगिता के सहभागी

बैंक हाउस में आयोजित

हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

उच्चाधिकारियों का स्वागत एवं दीप प्रज्ज्वलन

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के कर कमलों द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर वर्ष 2014-15 के

राजभाषा शील्ड पुरस्कार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदरबीर सिंह, आई.ए.एस., उच्चाधिकारियों को प्रेरित करते हुए।

प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग

प्रधान कार्यालय, अनुपालन विभाग

प्रधान कार्यालय, जन-संपर्क विभाग

प्रधान कार्यालय में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह

कार्टून कोना

कार्टूनिस्ट : श्री प्रदीप कुमार राय, प्र.का. सतर्कता विभाग।

ज़िंदगी

- पीयूष कुमार

ज़िंदगी रुकती नहीं
चलती है
अनवरत........
सहकर झंझावातों के घातक थपेड़े
सहती है
प्रकृति की
दी हुई सारी परेशानियाँ
राह बनाती है
दुर्गम पर्वतों में
लांघती है
विशाल सागर को
छूना चाहती है
ब्रह्मांड का अंतिम छोर
जानती है यह सच्चाई
कि जहाँ रुकी, वहीं उसका अंतिम
प्रयाण होगा
चलना और निरंतर चलते रहना ही ज़िंदगी की ज़िंदगी है।

आंचलिक कार्यालय, होशियारपुर

ज़रा सोचिए.....

राजिंदर सिंह बेवली

मैं और मेरी पत्नी स्कूटर पर जा रहे थे। हमारे आगे कुछ ही दूरी पर एक लैंसर कार चल रही थी। कार और हमारे बीच एक लड़की स्कूटी पर जा रही थी। थोड़ी देर बाद अचानक कार की ड्राइवर सीट वाला शीशा खुला और उड़ता हुआ एक केले का छिलका दनदनाता हुआ सड़क पर आ गिरा। स्कूटी पर जा रही लड़की अचानक डगमगा गई और दुर्घटना का शिकार होते-होते बची। आगे लाल बत्ती हो गई और कार लाल बत्ती पर रुक गई । हमारा स्कूटर, कार चालक वाली खिड़की की ओर था और स्कूटी वाली लड़की दूसरी ओर। मेरी पत्नी ने कार की खिड़की खटखटाई। धीरे-धीरे शीशा नीचे हुआ। मेरी पत्नी ने कार चालक से कहा "सर, आपने जो पीछे केले का छिलका फेंका है, उससे वह लड़की (दूसरी ओर लड़की उसकी ओर गुस्से से देख रही थी) गिरते-गिरते बची है। आपके साथ वाली सीट पर बैठे सज्जन अभी केला खा रहे हैं। निवेदन सिर्फ इतना है सर, कि आपके साथ वाले कृपया अपना केले का छिलका, आगे जा कर सड़क पर न फेंकें। बत्ती हरी हो चुकी थी। चालक ने गर्दन झटकी, नाक मुँह सिकोड़ा, शीशा ऊपर हुआ और कार अपने रास्ते आगे बढ़ गई, हम अपने रास्ते और वह लड़की अपने रास्ते।

कितनी ही चीजें देखते हैं हम सड़क पर इस तरह से गिरते हुए........ पानी की बोतलें, चॉकलेट के रैपर, चिप्स के लिफाफे, मूँगफली के छिलके..... और न जाने क्या-क्या ।

विचार करें, कहीं हम और आप भी ऐसे ही तो नहीं .... ज़रा सोचिए.................

- संपादक

अपने घर में हिंदी

वैभव कुमार मिश्र

सैकड़ों वर्षों तक गुलामी झेलने के बाद 14 सितंबर 1949 के दिन आज़ादी के बाद हिंदी को देश की राजभाषा बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इसी कड़ी में सन् 1953 में निर्णय लिया गया, जिसके फलस्वरूप प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हिंदी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है परंतु आज हम भारतीय ही इस भाषा को अमल में नहीं ला रहे हैं। मौका मिला नहीं कि हम अंग्रेजी को ही आगे सरका रहे हैं। यह सभी सरकारी विभागों में देखा जा सकता है। शासकीय प्रयोजन के अधिकतर कागज़ी कार्यवाही से हिंदी गायब होने लगी है। यह आज की बड़ी चिंता है।

वास्तव में कितनी अजीबो-गरीब स्थिति है, आज हम भारतीय ही अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने में झिझकते हैं। हम हिंदी भाषियों ने कहाँ और कब सुन लिया कि हिंदी में लिखने या बोलने पर असर कम होगा और हमने ऐसा मान ही क्यों लिया? जब हम बिना आत्मविश्वास के साथ हिंदी बोलेंगे, तो क्या खाक असर होगा। असल चीज है, आत्मविश्वास। स्वयं सोचिए जिस भाषा ने हमें स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिस भाषा ने उपभाषाओं को भी जन्म दिया, जिस भाषा से हमारा भारत विश्व में जाना जाता है, आज हम अपनी उस मातृभाषा को भुलने में लगे हैं, डरते हैं, झिझकते हैं। अरे साधारण सी बात है भला कोई अपनी माँ से क्यों डरेगा? यह तो ईश्वर का वरदान है।

आज हम भारतीयों में जो टीपने-टापने वाले लोग, जो अपनी सोच, संस्कृति और भाषा से दूर होते जा रहे हैं, वो दिखते भी टीपे हुए हैं, मतलब नकल किए हुए हैं, उन्होंने जीवन-शैली और वेषभूषा तो अन्य देशों की अपना ही ली, पर मातृभाषा क्यों गवां दी? सबसे अजीब बात तो यह है कि हम अंग्रेजी के प्रभाव से प्रभावित होते जा रहे हैं जबकि वास्तविकता यह है कि कितनी भी अच्छी अंग्रेजी बोल लीजिए, किसी भी हद तक जाकर हिंदी या अपनी भाषा को ठुकरा दीजिए, अंग्रेज तो बन नहीं जाएंगे। विदेशी भाषा से इतना लगाव क्यों है हमें? यह तो वैसी ही बात है कि अपनी माँ को छोड़कर किसी और की माँ को अपना कहना। भाषा माँ सिखाती है, माँ जैसी होती है तभी तो मातृभाषा कहलाती है। उसे कैसे बदल लें? हम आपको याद दिलाते हैं जब गुलामी के दौर में जो इंसान अंग्रेजी बोलता था, अंग्रेज़ी तौर तरीकों की प्रशंसा करता था, उसके लिए व्यंग्य में कहा जाता था कि - ''खाता यहाँ की, गाता वहाँ की है'' लगता है व्यंग्य वाला भाव हट गया है और यह उपालम्भ अब सच साबित हो गया है।

हमारे यहाँ जब विदेशी लोग इतनी मेहनत और मन से हिंदी सीखकर भारत में आते हैं और हममें से कोई जल्द हिंदी में बोलने को तैयार नहीं होता। यहाँ लोग मुँह ऐंठ-ऐंठ कर ऐसी अंग्रेज़ी बोलते हैं मानो भारत, भारत नहीं इंग्लैंड हो - और ब्रिटिश शासन हो। मित्रों, हमारा परिचय हमारी मातृभाषा से होता है न कि पराई भाषाओं से। यह तो बड़ी शर्म की बात होती है कि हम अपना परिचय अपनी मातृभाषा में न देकर किसी दूसरी भाषा की सहायता से देते हैं।

क्या रातों-रात सारे हिंदी भाषी अंग्रेज़ हो गए हैं? उत्तर में अब भी यही प्राप्त होता है, नहीं। क्योंकि आज भी करोड़ों लोग हिंदी में बोलना, लिखना, पढ़ना जानते हैं, लेकिन झिझकते हैं। आप उनके

सामने बोलें, हिंदी में लिखें, पढ़ें। आप ऐसा करेंगे, तो आप से प्रेरित होकर दस अन्य लोगों को शक्ति मिलेगी, उनकी हिचक मिटेगी। दूसरे का मुंह मत देखें, आप ही शुरू करें। हीनग्रंथि खत्म करें, हीनभावना निकालें। सामान्य से शुरू करें और अच्छी हिंदी तक पहुंचें। स्वयं सोचिए अगर किसी की प्रशंसा करनी हो, तो अद्भुत, अविश्वसनीय, आनंददायक, सुखद, सुमधुर, शानदार, अच्छा जैसे पचासों विशेषणों में से चुनना अच्छा होगा या "गुड" कह देना।

हिंदी में शक्ति है, सामर्थ्य है, आकर्षण है, असर है। कमी है तो हिंदी भाषियों में है - आत्मविश्वास और अपनी भाषा में विश्वास की। जिन देशों में हिंदी नहीं के बराबर है और जहाँ के निवासी हिंदी बिल्कुल नहीं जानते हैं, वहाँ भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से पहुंचे हिंदी फिल्मों के सुमधुर गाने उनके होंठो पर गाते गुन-गुनाते दिखते हैं। रूस में नौजवानों से लेकर दुकानदारों तक ने किसी भी भारतीय व अन्य के स्वागत के लिए "सर पे लाल टोपी रूसी, "फिर भी दिल है हिंदुस्तानी" गीत गाकर करते हैं। जोहांसबर्ग में भी बहुत से नौजवान राह चलते मिलेंगे, जो हिंदी के जुमलों से अभिनंदन करते हैं। "नमस्ते" शब्द तो एक तरह से सार्वभौम हो गया है। इस शब्द में बड़ी नैतिकता है, शिष्टता है आप भी करके देखें तो पाएंगे कि सामने वाला व्यक्ति आप से आकर्षित होगा। टीवी चैनलों ने भी हिंदी का प्रचार-प्रसार खूब किया। दूरदर्शन पर "रामायण" और "महाभारत" धारावाहिक देखने के लिए हिंदीतर प्रदेशों में भी लोग आतुर रहते थे। पिताश्री, माताश्री, जैसे सम्बोधन और तमाम संस्कृत शब्द इनके प्रसारण के बाद ही समाज में फिर से प्रचलित हुए।

अब आप यही सोचिए कि कोई अंग्रेज़, अंग्रेजी बोलने से पहले आपसे पूछता है की आप समझ पाएंगे या नहीं। वह बस बोलता है। आप भी अपनी भाषा में बोलें। पूरी दमदारी से बोलें। कोई अंग्रेज़ी में प्रश्न करे, तो जवाब आप अपनी भाषा में ही दें। भारत में ऐसा कोई नहीं, जो हिंदी से पूरी तरह अंजान हो, हिंदी से उसको वास्ता ही न पड़े। मातृभाषा महत्वपूर्ण और अनिवार्य है। यह रक्त की तरह हमारी रगों में दौड़ती है। मेरे मन में बार-बार विचार आता है कि भला कोई अपनी मातृभाषा से दूरी बनाकर खुद को जीवित कैसे कह सकता है? अतः निष्कर्षतः जो भारतीय हिंदीभाषा या अपनी मातृभाषा बोल-पढ़-लिख न सके, वो हिन्दुस्तानी स्तर पर तो निरक्षर ही कहा जाएगा।

- आंचलिक कार्यालय, पटियाला

आओ हिंदी अपनाएं

अमित नागर

हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है क्या सबको बतलाना है।
हिंद देश के वासियों को क्या इसके लिए जगाना है।
सोए हुए हैं जो वर्षों से अंग्रेजी के साये में।
उनको भी हम याद दिला दें, वे हैं, गैरों की बाहों में।

मातृ भाषा को त्याग कर पर भाषा जो अपनाते हैं।
अपने ही देश में रहकर परदेशी कहलाते हैं।
भाषा मनुष्य की पहचान है आन-बान व शान है।
मातृ भाषा में संस्कार है पूर्वजों के परिष्कार हैं।
भाषा देश की संस्कृति है।
जिससे देश की विविधता जुड़ी है।
मातृभाषा का सम्मान है तो देश भी महान है।
परभाषा के आगोश में तो व्यक्ति की भी नहीं कोई पहचान है।

मातृ भाषा को अपनाने में जाने क्यों हम हिचकिचाते हैं।
क्यों अपनी ही माता से मिलने में इतना सकुचाते हैं।।
माता जिसने जन्म दिया है, उससे अगर सकुचाओगे।
तो जीवन के हर पथ पर पक्का डगमगाओगे।।

जिन अंग्रेज़ों से मुक्ति के लिए बलिदान हुए,
उन्हीं अंग्रेज़ों की भाषा में अगर सरकारी काम-काज हुए।
तो यह एक अभिशाप है बलिदानों पर दाग है, लगता है।
हम अंग्रेज़ों से तो मुक्त हुए हैं।
पर अंग्रेज़ी भाषा के अभी भी मानसिक गुलाम हैं।

यह प्रण करें, हौसलों को बुलन्द करें
आओ अब अंग्रेज़ी के प्रयोग को तुरन्त प्रभाव से बन्द करें।

राज-काज में अंग्रेज़ी के वर्चस्व को हटाना है।
हिंदी हमारी मातृभाषा है जिसे हमें अपनाना है।
मातृ भाषा को अपनाने से ही शब्द सबल बनेगा,
परभाषा के प्रयोग से मुक्ति को भी बल मिलेगा
और देश भी सही मायने में तभी पूर्णरूप से स्वतंत्र बनेगा।

- प्रधान कार्यालय जोखिम कार्यालय

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

आंचलिक कार्यालय, जालंधर

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

विमोचन

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री जतिन्दर बीर सिंह,(आई.ए.एस.) बैंक पत्रिका राजभाषा 'अंकुर' के नवीनतम अंक का विमोचन करते हुए। चित्र में कार्यकारी निदेशक, श्री मुकेश कुमार जैन, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री एम. जी. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा तथा श्री राजिन्दर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) तथा डॉ. नीरू पाठक, प्रबंधक।

महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा व राजभाषा विभाग के अधिकारी बैंक गृह पत्रिका राजभाषा 'अंकुर' के विमोचन के उपरांत महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री दीन दयाल शर्मा तथा राजभाषा विभाग के अधिकारीगण। बाएं से दाएं श्री तारा चंद, अधिकारी, श्री त्रिलोचन सिंह, राजभाषा प्रबंधक, श्री कुलदीप सिंह खुराना, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री दीन दयाल शर्मा, महाप्रबंधक, श्री कँवर अशोक, वरिष्ठ प्रबंधक, (राजभाषा), डॉ. नीरू पाठक, प्रबंधक, श्री रूप कुमार, श्री दीपक साव तथा श्री अनिल शुक्ला, राजभाषा अधिकारी।

बैंक मित्रों हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय बैंकिंग व वित्त संस्थान की परीक्षा के लिए बैंक द्वारा आँचलिक कार्यालय, लखनऊ, बरेली, गुरदासपुर एवं बठिंडा में बैंक मित्रों के लिए वित्तीय समावेशन एवं सामान्य बैंकिंग संबंधी एक–एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारतीय बैंकिंग व वित्त संस्थान द्वारा 6 अगस्त 2105 को आयोजित परीक्षा में हमारे बैंक का परिणाम 83 प्रतिशत रहा जो कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हमारे बैंक की एक अद्भुत उपलब्धि रही।

बैठक

प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए बैंक के कार्यकारी निदेशक, श्री मुकेश कुमार जैन। साथ में उपस्थित हैं श्री दीन दयाल शर्मा, महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं अन्य अधिकारीगण।

कहानी

सेवक

उपदेश सिंह सचदेवा

सर्दियों की शाम थी। शाम क्या लगभग रात हो गई थी। ठंड से कंपन महसूस हो रही थी। धीमे-धीमे से कीर्तन चल रहा था। पर संगत अधिक नहीं थी। श्रद्धालुगण माथा टेकते और बाहर आ जाते। कीर्तन कानों और दिल को छू रहा था। सारा वातावरण शांत था। शब्द की पहली पंक्ति थी :

' सबना का माँ प्यो आप है, आपे सार करे।'

यानि हे प्रभु तू सभी का माता-पिता है और तू ही सभी का ध्यान रखता है सभी के सुख-दुःख को देखता, समझता है।

मैं काफी लेट हो चुका था। मैंने माथा टेका, हाल से बाहर आ प्रसाद लिया, खाया। फिर अमृत लिया और पिया। फिर निशान साहब की ओर बढ़ा। निशान साहब को माथा टेका। जल्दी में आगे बढ़ते ही मेरी दृष्टि कोने में खड़े एक व्यक्ति पर पड़ी। पुरुष सिक्ख था, शरीर पतला, सफेद कुर्ता पायजामा पहने था। सिर पर सफेद पगड़ी। सफेद खुली दाढ़ी, चेहरा मुर्झाया हुआ। रंग गेहुँआ। उम्र लगभग 75-80 के बीच में। बाबा की आंखों में आंसू थे और वो बिलख-बिलख के रो रहा था। ऐसे जैसे कोई अनाथ हो या ऐसे जैसे कोई बच्चा मेले में अपने माता-पिता से बिछुड़ गया हो।

लोग बाबा को देख रहे थे लेकिन कोई ऐसा न था जो उसके पास जा उसकी व्यथा पूछता। मुझसे न रहा गया। मैं बाबा के पास गया। बोला, ''क्या समस्या है आप की? आप रो क्यों रहे हैं?''

पुरुष ने मेरी ओर देखा और गहरी आंखों से देखता ही रहा। उसका रोना बंद न हुआ। और भी बढ़ गया।

मैंने फिर से पूछा, ''आपको क्या तकलीफ है? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?''

बाबा रोते हुए ही बोला, ''मेरा बेटा और बहू मुझे अपने साथ लाए थे। कहने लगे आप यहाँ खड़े रहें, हम दस मिनट में आते हैं, तीन घंटे हो गए, नहीं आए। अब मैं कहाँ जाऊं? मेरे बच्चों के सिवा मेरा कोई भी तो नहीं। मेरा न घर है और न मेरे पास कोई पैसा।

जो थोड़ा बहुत जमा पैसा था ले लिया मुझसे और जो मेरा छोटा सा घर था, उसे बिकवा कर अपने नाम एक फ्लैट ले लिया। अब मैं क्या करूँ?''

''आप रोना बंद करिए। सब ठीक हो जायेगा। आपके बच्चे आ जाएंगे। कहीं अटक गए होंगे। दिल्ली शहर है। कोई पता नहीं चलता भीड़-भड़ाके का।''

''अब कौन आएगा? बेटा, अब कोई नहीं आएगा।''

''मैं आपको किसी चीज़ का वायदा तो नहीं करता यदि आप आप मेरे साथ चलना चाहें तो चल सकते हैं।

बाबा ने अपने कुर्ते को ऊपर उठा अपने आंसू पोंछे और बोला, ''बेटा मेरा तो है नहीं कोई। बेटा-बहू तो मुझे यहीं छोड़ चले गये। इन तीन घंटों में यहाँ खड़े-खड़े मैंने क्या क्या नहीं सोचा। क्या-क्या मेरी आंखों के सामने नहीं आया। मैं अपने आप को भीख माँगता भी दिखा।

सौ-सौ दुआएँ माँग कर पाया था बेटे को। मैं और मेरी पत्नी सभी तीर्थ-स्थानों पर गए थे आखिर हेमकुंठ साहब जा बेटे के लिए दुआ मांगी थी, बेटा हुआ। जान-प्राण दे कर पाला, बड़ा किया खैर, वाहेगुरु उसको खुश रखे।''

''तो चलें?'' मैंने कहा।

बाबा फिर बोला, ''पहले मुझे घर से एक वृद्ध आश्रम में ले

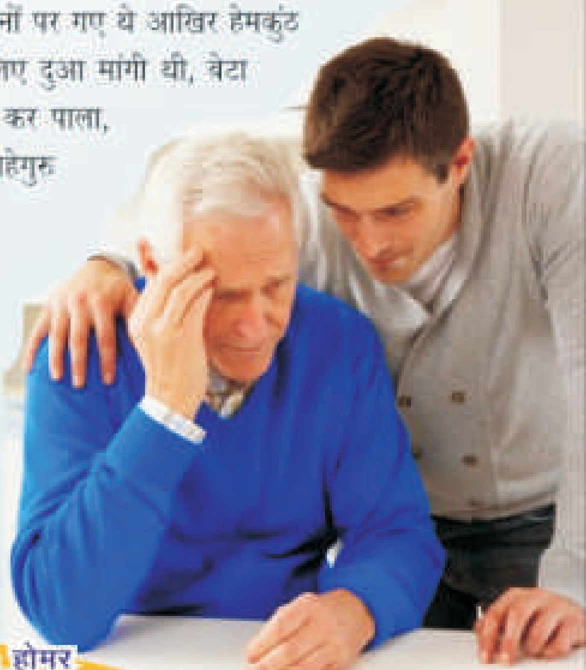

गए। पर वृद्ध आश्रम में तो पैसे देने पड़ते थे। तीन महीने बाद आज दोनों आए और मुझे यहाँ ले आए। अब वो क्यों आएंगे?''

''आइए, आ जाइए, चलते हैं,'' मैंने कहा

''क्या हो गया है आज। मैं तब जवान था। शादी नहीं हुई थी। माता-पिता की देख-रेख में रहता था। पिताजी मज़दूरी करते थे। फिर बीमार रहने लगे। टी.बी. थी। अस्पताल दूर था। किराये के पैसे भी नहीं हुआ करते थे। कंधे पर उठा ले जाया करता था उन्हें अस्पताल। ये एक दिन का काम नहीं था सर्दी हो या गर्मी या फिर बारिश, यही तरीका था। तो बताओ मुझे, ये कोई एहसान था उन पर। जिन्होंने जन्म दिया, बड़ा किया एक-एक पल अपनी जान न्यौछावर की वो भगवान नहीं तो क्या है। आज बच्चे माँ-बाप की हर बात को टोकते हैं बल्कि बहस करते हैं।

बेइज्जती करते हैं, कहाँ से आई ये तहज़ीब''

मुझे लगा शायद ये सब मुझे कहा जा रहा था।

बाहर जा हमने ऑटो रिक्शा किया।

मैंने पूछा, ''क्या करते थे आप? मेरे कहने का मतलब है आप कोई नौकरी करते थे या कोई अन्य काम धंधा''।

''एक प्राइवेट कंपनी में क्लर्क था।''

''कितने बच्चे हैं?''

''कहा न, यही बेटा है, ये भी सौ-सौ मन्नतें मान कर पाया था।''

''आपकी धर्मपत्नी?''

''उसे मरे तो बीस वर्ष हो गए।

बड़ा प्यार करती थी, जान देती थी बेटे पर।''

''उसके बाद?''

''उसके बाद क्या? पत्नी मरी तो जीवन ही दूभर हो गया। सच मानो तजुर्बे की बात कहता हूं यदि जीवन में कोई सच्चा साथी है तो वो है पत्नी और पत्नी के लिए पति। बेटा था जब तक उसकी शादी नहीं हुई थी। तब तक तो फिर भी जीवन चल रहा था। उसकी शादी हुई तो समस्याएँ आनी शुरू हुई। उसकी नौकरी भी कोई बहुत अच्छी न थी, खर्चा अधिक और आमदनी कम हो तो घर में क्लेश होता ही है। फिर बेटे की बेटी हुई, परिवार बढ़ा, ड्यूटी बढ़ी। उसके साथ ही छोटी-छोटी बात पर झिक-झिक बाज़ी।

तो फिर एक दिन बेटा-बहू मुझसे बोले, ''हमारे और आप के लिए अच्छा यही होगा कि आप वृद्ध आश्रम जा कर रहें। मैंने कुछ न कहा। अवस्था ही ऐसी थी। जब वहाँ गया तो देखा हर वृद्ध की अपनी ही एक अलग दुःख भरी कहानी थी। मरता क्या न करता। वहीं रहना था। बेटा महीने में एक बार आता, पाँच-सात मिनट बैठ कर चला जाता। खैर! जीवन का तजुर्बा बताता हूँ। बेटियाँ बेटों से सौ गुना अच्छी होती है। मरते दम तक उनके तार माँ-बाप से जुड़े रहते हैं।

''आज बेटा-बहू दोनों आए और मुझे अपने साथ गुरुद्वारे ले आए। आगे क्या होगा ये तो ऊपर वाला ही जाने।''

''सब ठीक हो जायेगा, धीरज रखिए''। बाबा फिर बोला, ''अब मुझे बताओ माँ-बाप क्या नहीं करते बच्चों के लिए? मल-मूत्र साफ करने से लेकर, खाना-पीना, रहन-सहन, पढ़ाई, उनकी सेहत सभी की फिक्र तो माँ-बाप को रहती है। कोई एक रात गीले बिस्तर पर सो के दिखाए। माँ को तो रोज़ ही सोना होता है बच्चे के साथ। पेशाब करता है, टट्टी करता है तो बिना किसी झिझक के माँ सभी कुछ साफ करती है और खुशी-खुशी सहती भी हैं। यही हालत बाप की भी है। तो फिर ऐसा क्यों, जब माँ-बाप बूढ़े, असहाय हो जाते हैं तो बच्चे उनसे बात तक करना पसंद नहीं करते। माँ-बाप की कोई भी बात, कोई भी आदत, कोई भी काम उन्हें अच्छा नहीं लगता। बात करते हैं तो गुस्से में। उन्हें शायद ये महसूस तक नहीं होता कि वो माँ-बाप का घोर निरादर कर रहे हैं। देखो बेटा एक बात कहूँ माँ-बाप सब कुछ

बर्दाशत कर सकते हैं लेकिन बेइज्जती नहीं। जिनको जन्मा, पाला-पोसा बड़ा किया, जिनकी ज़रा सी तकलीफ पर अपनी जान तक न्यौछावर की, रात-रात भर सोये नहीं, कहीं से भी पैसा माँगा, उधार लिया लेकिन बच्चे का इलाज करवाया। तो फिर उसी बच्चे से अपनी बेइज्जती सही नहीं जाती। आखिर ऐसा होता ही क्यों हैं?''

बाबा की आँखों में एक बार फिर आंसू आ गए, टपके नहीं, आंखों में घूमते रहें।

''एक लाख रुपया कर्ज़ लिया था रिश्वत देने के लिए तब कहीं बेटे की नौकरी लगी थी। आज मुझे दो वक्त की रोटी खिलाने में उन्हें तकलीफ होती है। बहू है तो अच्छी, अच्छे घर से है लेकिन न जाने ऊपर वाले का क्या विधान है।

बात-बात पर गुस्सा खाती है, कहती है, कोई काम काज करते नहीं। पड़े रहते हैं सारा दिन। खर्चा बहुत है। कहाँ से पैसा आए? ये सब बहाने हैं मुझे घर से भगाने के। शायद सोचते हैं इन बातों से तंग आ कर मैं आत्महत्या कर लूँगा। सच मानो सोचा भी था कई बार। एक बार तो सचमुच कोशिश भी की। सफल नहीं हुआ। ट्रेन आने से पहले ही कुछ लोगों ने देख लिया और पकड़ कर ले गए।''

''अब आप मेरे पास ही रहोगे। मैं हूं, मेरी पत्नी और दो बच्चे हैं। दोनों स्कूल जाते हैं। आप अब मेरे घर ही रहोगे।''

''मैं सिक्ख हूं। दिल्ली में कई गुरुद्वारे हैं। घर के पास भी दो-तीन हैं। लंगर गुरुद्वारे में सिक्ख धर्म की प्रथा है। सच मानो मेरी कोशिश तो यही रही है कि चुपचाप गुरुद्वारे जाऊँ और लंगर खा वापस आ जाऊँ। लेकिन शर्म आती है। क्या सोचते होंगे मुझे देखने वाले। रोज़ आ जाता है शर्म नहीं आती।

''नहीं बेटा मैं नहीं रहूँगा तुम्हारे पास। तुम्हारा शुक्रिया। मैं कोई भिखारी नहीं हूँ। मरना पसंद करूँगा। क्यूं कर बोझ बनूँ किसी पर?''

''नहीं बाबा मैं विश्वास दिलाता हूँ आप हम पर बोझ नहीं होंगे। ये हमारा अहोभाग्य होगा कि आप हमारे साथ रहें।''

''बस बेटा मुझे यहीं उतार दो। और छोड़ दो मुझे मेरी किस्मत पर।''

''नहीं बाबा ऐसा नहीं होगा।''

''अच्छा एक बात बताओ, मैं तो तुम्हारा कुछ भी नहीं लगता फिर तुम क्यों ये मेहरबानी करना चाहते हो मुझ पर।''

''सच बताऊँ बाबा? वैसे तो सच बोलना बड़ा कठिन होता है लेकिन फिर भी बताता हूं।''

''मैं माँ-बाप की इकलौती औलाद हूं। हम गरीब थे। माँ-बाप ने क्या नहीं सहा, क्या नहीं किया मुझे पालने, बड़ा करने, पढ़ाने लिखानें में। शादी की मेरी, फिर बच्चे हुए। एक लड़का, एक लड़की। पिता जी रिटायर हुए तभी माँ चल बसी। पिताजी के साथ हमारी खटपट शुरू हुई। यहाँ तक की लड़ाई भी होती। आस पड़ोस वाले देखते। हमने फैसला किया कि पिताजी को वृद्ध आश्रम छोड़ आएं। पिताजी ने न नहीं किया। पैसे देने पड़ते थे हमें। पत्नी को अच्छा नहीं लगता था। एक दिन मैं पत्नी के साथ वृद्ध आश्रम गया और पिताजी को साथ ले आया। मंगलवार का दिन था, कनॉट प्लेस में हनुमान मंदिर है। मंगलवार को बड़ी भीड़ होती है भक्तजनों की। वहीं पिताजी को खड़ा कर कहा, ''हम अभी आते हैं आप यहीं रहना।''

''हम वापिस नहीं गए। उनका क्या हुआ प्रभु जाने। बड़ा घोर पाप हुआ। जब सूझ आई तो मैंने दिल्ली के सभी मंदिर, गुरुद्वारों में जाना शुरू किया कि कहीं वो मिल जाएं। पुलिस में रिपोर्ट भी की। टी.वी. में भी फोटो सहित विज्ञापन दिया। पर कहीं पता न चला। आज लगभग 8 वर्ष हुए इस बात को। अपने किए पर बड़ा पछतावा है। आज आपको देखा तो आप में अपने पिता को पाया। शायद इससे कुछ तो प्रायश्चित हो। बस यही बात है।''

बाबा ने कुछ सोचा, फिर बोला, ''ठीक है तो चलो, चलता हूं।'' रात को सारी कथा पत्नी को बताई तो साथ ये भी कह दिया : '' बुज़ुर्ग हैं, घर में हम सभी को इनकी दिल से इज्ज़त करनी है। ध्यान रहे इस बात का''।

पत्नी बोली, ''अच्छा किया, प्रभु की महिमा अपरम्पार है। दाल रोटी खाएगा। लेकिन घर की चौकीदारी करेगा। बच्चों की देख-रेख भी करेगा। आखिर नौकर तो चाहिए था घर में। ''मुफ्त का सेवक''।

- पूर्व सहायक महाप्रबंधक

राजभाषा समाचार

बैंक के आंचलिक कार्यालय, लखनऊ में वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार के निर्देशानुसार राजभाषा कार्यान्वयन - आपसी संवाद-सार्थक दिशा के तहत बैंकिंग परिचालन के क्षेत्र में प्रभावी राजभाषा प्रयोग तथा ग्राहक सेवा संगोष्ठी।

डॉ. वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं, सहभागियों को संबोधित करते हुए।

श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक, प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग, सहभागियों से संयुक्त निदेशक महोदय का परिचय करवाते हुए।

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ में, भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं, के निर्देशानुसार राजभाषा प्रयोग आपसी संवाद–सार्थक दिशा के तहत ''ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राहक सेवा एवं हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग'' संगोष्ठी का आयोजन किया गया। चित्र में श्री वेद प्रकाश दुबे, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग मध्य में द्रष्टव्य है। बायीं ओर श्री राजीव रावत, आंचलिक प्रबंधक तथा दायीं ओर श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक, प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग।
संगोष्ठी में श्री वेद प्रकाश दुबे जी द्वारा सभी शाखा प्रबंधकों को संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली की मदों के प्रति भी जागरूक किया गया।

विभिन्न आंचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन

स्थानीय प्रधान कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आंचलिक कार्यालय, पटियाला

आंचलिक कार्यालय, मुम्बई

आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

विभिन्न आंचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन

सी बी आर टी, चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय, बरेली

आंचलिक कार्यालय, जालंधर

आंचलिक कार्यालय, नारायणा, नई दिल्ली

आंचलिक कार्यालय, गुरदासपुर

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना

सहभागी

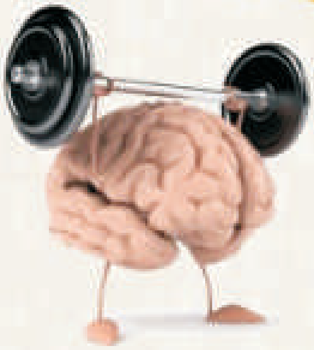

मस्तिष्क की सेहत भी ज़रूरी है

इन्दर जीत सिंह

अधिकांश लोग सोचते हैं कि केवल शरीर की सेहत का ध्यान रखने पर ही कार्य समाप्त हो जाता है। मनुष्यों की औसत आयु बढ़ जाने से जीवन के वरिष्ठ वर्षों में अब लोग अधिक मस्तिष्क की बीमारियों से प्रभावित होने लगे हैं जिनमें प्रमुख है अल्ज़ीमरस (Alzheimer's disease) और पार्किन्सन (Parkinson's disease AD&PD)। इसलिए हमारी स्वास्थ्य योजना में शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए उचित स्थान होना चाहिए। मस्तिष्क की सेहत का ध्यान हर उम्र में रखना चाहिए। वैज्ञानिक खोजों से ये निष्कर्ष आए हैं कि जीवन में जरूरी स्वास्थ्य क्षेत्रों में आदर्श स्थिति के लिए निम्न पक्षों का ध्यान जरूरी है :-

1. शारीरिक पक्ष : मैं अपने शरीर का पूरा ध्यान रखता हूँ।
2. मानसिक पक्ष : मैं सदैव सीखने में लगा रहता हूँ।
3. भावनात्मक पक्ष : मैं संतुलन बनाये रखने के लिए कार्यरत हूँ।
4. आध्यात्मिक पक्ष : मैं उस परम शक्ति से जुड़ा हूँ।

क्या यह आदर्श स्थिति हमारे साथ है या एक या एक से अधिक पक्षों में और अधिक ध्यान, यत्न और समय लगाने की ज़रूरत है।

हम अच्छे मस्तिष्क के कार्यों को मुख्यतः निम्न परिणामों से आंकते हैं :-

1. बेहतर स्मरण शक्ति
2. अच्छा मूड
3. अच्छी नींद
4. तेज और सटीक सोचने की क्षमता
5. अधिक कार्य कुशलता
6. सुधरा हुआ समन्वय (Balance)
7. अच्छी शारीरिक सेहत
8. अधिक ऊर्जा
9. तीव्र प्रतिक्रिया क्षमता
10. सुरक्षित ढंग से गाड़ी चलाना
11. आत्म विश्वास
12. सुनने की अच्छी क्षमता

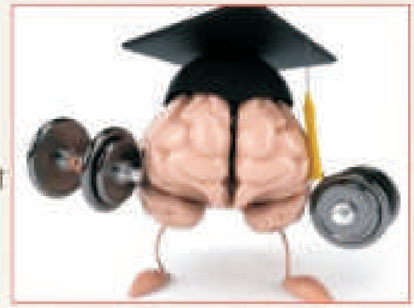

सभी मानेंगे कि यह तो एक बहुत सुदृढ़ जीवन शैली (Life Style) से ही संभव हो सकता है। पर आजकल के तनावपूर्ण तथा प्रतिस्पर्धापूर्ण जीवन में, जब दिन के 12-13 घंटे काम पर जाने की तैयारी, रास्ते में और कार्य स्थान पर ही बीत जाते हैं, 8 घंटे नींद के निकाल दें तो बाकी सभी के लिए समय कहां बचता है। एक अच्छी दिनचर्या बहुत टेढ़ी खीर है।

मस्तिष्क कैसे काम करता है? यह तो एक बड़ा विषय है। हम यह जानें कि मस्तिष्क की खुराक शरीर से ही आती है जो कि स्वच्छ खून (सभी तत्वों से भरपूर), प्राप्त मात्रा में ऑक्सीजन और हार्मोन (चार मस्तिष्क स्थित गूलैंडस से और बाकी शरीर में स्थित गूलैंडस द्वारा उत्पादित) का मिश्रण होता है।

स्वच्छ खून, अच्छी संतुलित खुराक, शारीरिक स्वास्थ्य और रक्त उत्पादन प्रणाली पर निर्भर करता है। ऑक्सीजन अच्छी श्वास कुशलता (Lung Power/Healthy Breathing) से आती है और हार्मोन उत्पादन सभी गूलैंडस के अच्छे काम से होते हैं। इन सब के लिए स्वस्थ शरीर, पर्याप्त व्यायाम, संतुलित आहार, पर्याप्त नींद, तनाव मुक्ति, अच्छे विचार, आदि जरूरी है। बहुत से लोग मानते हैं कि यदि अधिक उम्र में होने वाली बीमारियाँ (AD&PD) अनेक बुजुर्गों को थीं तो उनकी अधिक उम्र में उन्हें भी आएंगी ही। पर आधुनिक खोजों ने पाया है कि जींस (Genes) प्रभावित होते हैं बाहरी परिस्थितियों में बदलाव जैसे खानपान, रहने की परिस्थितियाँ (Living Condition), व्यायाम, तनाव, ध्यान लगाना (Meditation), वातावरण से आने वाले प्रदूषण से, दिल दहलाने वाली घटनाएं

मृत्युतदंड और विवाह भाग्यानुसार ही होता है। - शेक्सपीयर

(Dramatic Events) और लम्बे समय तक चलने वाला तनाव, दुःख, आदि से। अतः पिछली पीढ़ी की दिमागी विषमताओं को अपना भाग्य न समझें और उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें और सफल हों।

50-60 वर्ष की आयु में हाई कॉलेस्ट्रोल, उच्च-रक्त चाप, स्मरण शक्ति को प्रभावित करते हैं और हृदय रोग में परिवर्तित होते हैं अतः यदि रक्त-चाप पर नियंत्रण रखें तो स्मरण शक्ति के कमजोर होने और AD से प्रभावित होने का जोखिम कम हो जाता है।

हृदय एवं मस्तिष्क संबंधित निम्न चिह्नों (Symptoms) को हमें याद रखना चाहिए और उनके प्रकट होने पर तुरंत प्रभावी कदम उठाने चाहिए :-

हृदय :

1. अचानक बाँह, कंधे, पीठ जबड़े, पेट में तेज दर्द का उठना।
2. सांसों का तेज चलना।
3. छाती में दर्द।
4. अचानक नींद जैसी स्थिति आना।
5. स्मरण-शक्ति खो जाना।
6. उत्सुकता।

दिमाग :

1. अचानक चेहरे, बांहों, टांगों, शरीर के एक तरफ भारीपन।
2. अचानक बोलने, सुनने, समझने में दिक्कत होना।
3. अचानक एक या दोनों आंखों से देखने में परेशानी होना।
4. चलने में दिक्कत, नींद का अनुभव, लड़खड़ाना
5. अचानक तेज सिर दर्द।

मस्तिष्क की चोट से बेहोश होना ही जरूरी नहीं है। अगर सिर पर चोट या झटके के बाद निम्नलिखित चिह्न दिखें तो यह मस्तिष्क की चोट ही समझें और तुरंत इलाज करवायें, इमरजेंसी में :-

1. पहचानने में दिक्कत होना
2. व्यवहार में परिवर्तन (चिड़चिड़ापन)
3. मानसिक तनाव
4. धुंधलापन
5. सिरदर्द
6. भावुकता में अधिकता दिखना
7. नींद खराब होना, दिन में बोझिलता
8. प्रतिक्रिया में सुस्त होना
9. बेहोशी आना

दिमागी सेहत के लिए अपनी एक आदर्श दिनचर्या लिखें, ईमानदारी से उस पर अधिक चलें, तनाव से दूर रहें, अपनी हॉबी के लिए समय निकालें। अपने शरीर और मस्तिष्क की सेहत का ध्यान रखें। आखिर जीवन है आपका, किसी और का नहीं और इसके लिए आप, और सिर्फ आप उत्तरदायी हैं।

- पूर्व प्रबंधक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, चंडीगढ़

ये चार, हैं बेकार

प्रतीक गोयल

साथियों इन चारों ने किया है देश को बर्बाद।
बेरोज़गारी, आतंकवाद, बढ़ती जनसंख्या और भ्रष्टाचार।।

बैठे हैं जो बड़ी कुर्सियों पर, वो जनता की अनदेखी कर रहे हैं।
भुला के जनता के सब दुख-दर्द, वो अपनी जेबें भर रहे हैं।।

एक से भले दो, दो से भले चार, इस राह पर चलता रहा परिवार।
नतीजा है सामने गरीबी, भूख और तकरार।।

क्या उम्मीद करें खुशियों की उनसे, देते जो आतंकवाद को सहारा।
आखिर कब तक सहेंगे हम, ऐसे ही हालातों का नजारा।।

साथियों इन चारों ने किया है देश को बर्बाद।
बेरोज़गारी, आतंकवाद, बढ़ती जनसंख्या और भ्रष्टाचार।।

- शाखा लाखनमाजरा, हरियाणा

बंगला कहानी

স্বাধীনতা

दीपक साव

আজ সকাল থেকে মানুষরা তাদের বাড়ি তে বসেছিল। গোটা এলাকা শান্ত। কোথাও ভাঙ্গা দোকান কোথাও অর্ধেক পোড়া ঘর। চারিদিক মেঘে কালো ধোঁয়া...। এই ধোঁয়া টা প্রতিটি রাতে আরো ঘন হয়ে উঠছিল। রাস্তা তে কখনও কংগ্রেসী লোকে দেশ ভাগের বিরোধতার স্লোগান তুল ছিল কোথাও কম্যুনিষ্ট দল নিজেদের মধ্যে মীটিং করছিল। এমন একটি গ্রাম ছিল পশ্চিম বঙ্গের জেলা 24 পরগনার শাহজাদপুর। যেখানে হিন্দু বা মুসলিম দুটো ধর্মের মানুষরা থাকত। তারা নিজেদের মধ্যে ঈদ বা দুর্গাপুজো এক সঙ্গে পালন করত। কিন্তু এই সময় তাদের মধ্যে একটি অবসাদ তৈরী হয় গিয়েছিল। লোকেরা তাদের মধ্যে দেখা হলে এক অপরের দিকে তাকালেও মুখ টা গম্ভীর হয়ে হাসতে পারত না মনে হবে যেন কেউ নজর রাখছে।

14ই আগস্টের দিনটা খুব খারাপ হয়ে তা রাখিল। খবর আসছিল যে শাহজাদপুর এবার পূর্ব পাকিস্তানে চলে যাচ্ছে। নিতাই রায় গ্রামের পুরনো জমীদার ছিলেন যার বাড়ির দুর্গাপুজোতে সকল গ্রামবাসীরা হিন্দু বা মুসলমান এক হয়ে মজা করত। কিন্তু আশফাক আজ নিতাই বাবু কে দেখলেও নমস্কার করল না। রায়সাহেব চাইছিলেন যে গ্রামটি ভারতে থাকুক যে কারণে আশফাক ওনার সংগে কথা বলতে ঘৃণা করত। আশফাকের বাবা মৌলানা আব্দুল রশীদ ও এটা চাইছিলেন কিন্তু ছেলে ও জামাতের ভয় ওনার কথা কেউ মানতে রাজী ছিল না। সেই সময় এই দাবি তে কথা হলে মৌলানা সাহেবের কথা কেউ বলতে দিতো না কি শাহজাদপুর ভারতে থাকবে উল্টে চুপ করিয়া দেওয়া হত। রশীদ মশাই দিনে পাঁচ বার নমাজ পড়তেন এবং তিনি ধর্ম থেকে দেশ কে বেশী ভালবাসতেন। রায়সাহেবের একটি মেয়ে ছিল, 19 বছরের হিনা তার এই নাম মৌলানা সাহেবের রাখা ছিল। তিনি তাকে নিজের মেয়ে মত ভালবাসতেন। দুটো ঘরে অনেক সদ্ভাবনা ছিল। হোক না কেন শাহজাদপুর মধ্যে শাহজাদী মুসলমানের আর পূর হিন্দুর শব্দ ছিল। কিন্তু কিছু দিন থেকে হিন্দুরা তাদের আত্মীয় বাড়ি তে চলে যাচ্ছিল বা পালাচ্ছিল। রায়সাহেব এটা চাইতেন না। তিনি বলতেন তাঁহার শেষ নিঃশ্বাস এই বাড়িতে নেবেন। কিন্তু কথা তাঁহার মেয়ের জীবনের ছিল। তিনি তাঁর মেয়ে হিনা কে কৃষ্ণনগরে তার মামার বাড়িতে পাঠিয়েছিলেন কিন্তু তাঁহার স্ত্রী তার কাছে থেকে গেলেন।

রাত্রির 10টা নাগাদ খবর আসলো যে শাহজাদপুর এখন থেকে পূর্ব পাকিস্তানে চলে গেছে। চারিদিকে লোকের মধ্যে কোথাও হাঁসি আবার কোথাও অবসাদ ছিল। রায়সাহেব ও মৌলানা সাহেবের মত লোক যেখানে হতাশায় ছিলেন ,সেখানে আশফাক এবং তার বন্ধুরা আনন্দে ছিল। চারিদিক লোকের পালানোর ঘটনা এবং লুটের খবর আসছিল। আশফাক এবং তার বন্ধুরা এই লুটপাটে ভাগীদার ছিল। আসতে আসতে এই লুটপাটের অগ্নি শাহজাদপুরেও ঢুকতে লাগল । মৌলানা রশীদ রায়সাহেবের বাড়িতে গিয়ে তাকে পালিয়ে যাবার পরামর্শ দিলেন। তার স্ত্রী শর্মিলার কথা মেনে তাকে ঘর ছাড়ার জন্য তাকে রাজি হতে হল। আগামী দিনের দুপুরে বেরোনোর কথা ঠিক হল।

রাত্রি বেলায় বেশ ভারী মন নিয়ে রায়সাহেব ঘুমোনোর চেষ্টা করছিলেন, হঠাত তার দরজায় কেউ জোরে মারতে লাগল এবং আওয়াজ আসছিল রায়সাহেবরা দুই জন বিছানা থেকে উঠে এসে দরজা এ কান দিয়ে শুনলেন এবং ভয়ে ভে দরজা খুলে রশীদ কে সামনে দেখে তিনি চমকে গেলেন। তখন রশীদ বলল পাশের গ্রামের ছেলেরা আজ রাতেই আপনার ঘর লুটপাট করা ঠিক করেছে। আপনারা এই জায়গায় থেকে পালিয়ে যান। এই কথা শুনে রায়সাহেব অবাক হয় গেলেন। ভিতরে বিষয় দেখে রশীদ রায়সাহেব কে নিজের বাড়ি নিয়ে গেলেন। গোটা রাত্রি রায়সাহেবের বাড়ির ভাঙা ভাঙ্গার এবং বাড়ির জিনিস পত্র ফেলার আওয়াজ আসছিল। দুই স্বামী ও স্ত্রী আতঙ্কে কাঁপ ছিলেন। গোটা রাত্রি তাঁরা জানালার ফাঁক থেকে তার বাড়ির করুণ দশা দেখে অসহায়ের মতো কাঁপ ছিলেন। যখনই কোনো আওয়াজ হচ্ছিল, উঁকি মেরে দেখছিলেন। সূর্যের আলো আসবার আগেই মৌলানা রশীদ নিজে হাতে লাঠি নিয়ে রায়সাহেব এবং তাঁর স্ত্রী কে গ্রাম থেকে বহু দূরে চোখের জলে বিদায় দিলেন। দুই স্বামী ও স্ত্রী তাকে হৃদয় থেকে ধন্যবাদ দিয়ে এগিয়ে গেলেন। রায়সাহেব ও তার স্ত্রী সূর্যের প্রথম আলোতে চোখে জল নিয়ে তার পুড়ানো ঘর দেখতে দেখতে চলে যাচ্ছিলেন, অন্যদিকে দেশ স্বাধীন হচ্ছিল.......

प्र.का. राजभाषा विभाग

हिंदी अनुवाद

स्वाधीनता

दीपक साव

आज सुबह से ही लोग अपने घरों में शांत बैठे थे। पूरा इलाका खाली पड़ा था। कहीं टूटी-फूटी दुकानें, तो कहीं अधजला घर। चारों ओर परिवेश में उठता काला धुआँ..... जो कि कई रातों से प्रतिदिन भयानक होता जा रहा था। सड़क पर कभी-कभार कांग्रेसियों का दल दिखाई पड़ता जो देश विभाजन के खिलाफ नारे लगाते दिख पड़ते, तो कहीं आपस में बैठकर मीटिंग करते कम्यूनिस्टों का समूह। ऐसा ही एक गाँव था पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले का शाहजहाँपुर, जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के लोग रहते थे। वे आपस में ईद एवं दुर्गापूजा मिल-जुल कर मनाते दिखते। पर इन दिनों उनके बीच एक तरह का अवसाद गहराया था। लोग एक दूसरे को देखकर ठीक से मुस्कुरा भी नहीं रहे थे। मुस्कुराहट भीतर से आना तो चाहती पर ऐसा लगता जैसे बाहर आने पर कोई पहरा था।

14 अगस्त का दिन बड़ा भारी बीत रहा था। सुना है कि शाहजहाँपुर अब पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बनने वाला था। निताई राय, इस गाँव के पुराने जमींदार हैं जिनके आँगन में दुर्गापूजा गाँव के सभी लोग चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान बड़े धूम-धाम से मनाते थे। पर अशफाक ने आज उन्हें देखकर नमस्कार भी नहीं किया। शायद वह इस बात से नाराज था कि रायसाहब चाहते थे कि शाहजहाँपुर भारत में ही रहे। चाहते तो अशफाक के पिता मौलाना अब्दुल रशीद भी यही थे पर बेटे और बिरादरी वालों के सामने उनकी बात न चली। जब भी कभी रात में सभा होती तो मौलाना रशीद को वहाँ भारत में रहने की अपील लोगों को नागवार गुजरती और उन्हें चुप करा दिया जाता। रशीद पाँचों वक्त के नमाजी थे और धर्म से ज्यादा वह अपने देश को अधिक प्यार करते थे।

रायसाहब की बेटी, 19 साल की हिना जिसका नाम मौलाना रशीद ने ही रखा था को अपनी बेटी से कम न समझते थे। दोनों घरों में आपसी सद्भाव भी था। और क्यों न हो गाँव शाहजहाँपुर में शाहजहाँ मुस्लिम तो पुर हिंदुओं का प्रतीक था। कुछ दिनों से गाँव के हिंदू अपने रिश्तेदारों के घर चले जा रहे थे या कहे तो दंगों से डरकर भाग रहे थे पर रायसाहब का मन न था। वे कहते थे कि उनकी आखिरी साँस इसी जमीन पर निकलेगी, मगर सवाल उनकी बेटी का था। उन्होंने हिना को कृष्णानगर उसके मामा के घर भेज दिया परन्तु पत्नी वहीं रह गई उनके साथ। रात्रि के 10 बजे तक यह खबर आने लगी कि शाहजहाँपुर अब पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा होगा। चारों तरफ कुछ लोगों में उत्साह तो कहीं निराशा थी। रायसाहब एवं मौलाना रशीद जैसे लोग निराश थे जबकि अशफाक एवं उनके साथी खुश थे।

चारों तरफ से लगातार लोगों के पलायन एवं लूट की खबर आ रही थी अश्फाक एवं पास के गाँव के लड़के इस लूट पाट में बराबर के हिस्सेदार थे। धीरे-धीरे लूट की आग शाहजहांपुर तक फैलने लगी। मौलाना रशीद राय साहब के घर जाकर उन्हें समझाने लगे कि वे चले जाएं। उनकी पत्नी शर्मिला के कहने पर राय साहब को मानना पड़ा।

अगले दिन दोपहर को निकलने की बात हुई। रात को बड़े भारी मन से राय साहब सोने की तैयारी में थे कि दरवाजे पर किसी की आहट एवं धीमें स्वर में 'रायसाहब' पुकारने से दोनों घबरा उठे। डरते हुए राय साहब ने दरवाजा खोला तो रशीद को सामने देख, वे आश्चर्यचकित हो उठे। तभी रशीद ने कहा कि पास के गाँव के लड़कों ने आज की रात 'रायसाहब' के घर को लूटने की योजना बनाई है। रशीद ने उन्हें रात अपने घर में ठहरा लिया। रात भर राय साहब के घर के ताले टूटने एवं सामानों के उथल-पुथल की आवाजें आ रही थीं। दोनों पति - पत्नी सहमे थे। रात भर वे खिड़कियों की फाक से अपने घर को देखकर रोते रहे फिर किसी आहट से डरकर बैठ जाते। सुबह होने से ठीक पहले जब आवाजें रुक गई तो मौलाना रशीद खुद हाथ में लाठी लेकर राय साहब एवं उनकी पत्नी को गाँव से दूर जाकर छोड़ आए नम आँखों से उन्हें विदा किया। दोनों उनका अहसान जताकर आगे बढ़ने लगे।

राय साहब और उनकी पत्नी सूर्य की पहली किरण के साथ अपने घर से उठते धुएँ को देख सहमे हुए आगे बढ़ रहे थे और दूसरी ओर देश स्वाधीन हो रहा था।

- प्र.का. राजभाषा विभाग

महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से सुरक्षा बंधन का महत्व

बिभाष कुमार

समावेशी विकास की बात तो उदारीकरण के पहले दशक से ही शुरू हो गई थी। लेकिन 11 वीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) में समावेशी विकास की बात को मूल-मंत्र के रूप में सरकारी घोषणा-पत्रों में जोड़ा गया। सही अर्थों में देखा जाए तो देश की आधे से अधिक आबादी को वित्तीय सेवाओं से महरूम रख कर, हम समावेशी विकास की बात नहीं कर सकते।

कुछ ही दिनों पहले ''प्रधानमंत्री जनधन योजना'' का एक वर्ष पूरा (28 अगस्त) हो चुका है। यह योजना न केवल भारतीय बैंकिंग इतिहास के लिए बल्कि वित्तीय समावेशन की दृष्टि से भी मील का पत्थर साबित हुआ है। पिछले एक वर्ष की अवधि में समूचे देश भर में लगभग 17.74 करोड़ नए खाते खोले गए, जो बैंकों के राष्ट्रीयकरण के 40 वर्षों बाद तक जितने खाते खोले गए थे, उससे दो गुना से भी ज्यादा हैं ।

पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में बैंकिंग सेवा का विस्तार काफी तेज गति से हुआ है । वर्ष 2011 में तत्कालीन वित्त मंत्री एवं वर्तमान में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने अपने बजटीय अभिभाषण में कहा था कि 2000 लोगों की बस्ती में कम से कम एक बैंक खोला जाएगा, जिनके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक बैंक की पहुँच हो सके। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए पिछले वर्ष प्रधानमंत्री ने 'प्रधानमंत्री जन-धन सुरक्षा योजना' की शुरुआत की। पंजाब एण्ड सिंध बैंक के साथ-साथ देश के सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने उत्साह दिखाते हुए 'प्रधानमंत्री जन-धन योजना' के लक्ष्य को काफी कम समय में ही पूरा किया। जन-धन पिछले वर्ष वित्तीय सेवा के विस्तार की दृष्टि से एक ऐतिहासिक कदम था। इसी कदम को आगे बढ़ाते हुए मई महीने में प्रधानमंत्री सुरक्षा बंधन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना जैसी कई योजनाओं की शुरुआत की गई, जिनके माध्यम से देश में हाशिए पर खड़े लोगों जिनके पास किसी भी तरह का 'जीवन' या 'दुर्घटना बीमा' नहीं था, उनको बिलकुल ही सस्ती दरों पर बैंकों के माध्यम से बीमा करने का देशव्यापी मुहिम छेड़ी गई। वैसे लोग जिनका बैंक खाता प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत खुला है उनका शत-प्रतिशत बीमा हो सके, इस दिशा में बैंक पिछले 5 महीनों से निरंतर लगे हुए हैं।

भारत में बैंकिंग एवं बीमा का कारोबार काफी सीमित रहा है। अमेरिका जैसे विकसित देशों से अगर हम तुलना करते हैं तो पाते हैं कि अमेरिका में जहाँ 95 प्रतिशत से अधिक लोगों का किसी न किसी तरह का बीमा है तो वहीं भारत में बमुश्किल 5 से 6 प्रतिशत लोगों के पास जीवन या अन्य किसी प्रकार का बीमा है। इस दृष्टि से देखेंगे तो बीमा कारोबार में हम काफी पिछड़े हुए हैं। कोई देश कितना विकसित है, इस बात का निर्धारण हम इस तरह से भी करते हैं कि उस देश के लोग अपने जान - माल के लिए कितने गंभीर हैं। इस दृष्टि से देखें तो जन और धन का बीमा विकास का भी एक पैमाना माना जाता है। बीमा कंपनियों के लिए तो यह एक कारोबार हो सकता है लेकिन आम आदमी के लिए यह अपने भविष्य को सुरक्षित करने का एक सुरक्षा कवच है।

देश के प्रत्येक परिवार को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने के बाद भारत सरकार ने प्रत्येक खाताधारक को 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बंधन बीमा योजना' के अंतर्गत 12 रुपए वार्षिक प्रीमियम की दर पर दो लाख रुपए की दुर्घटना बीमा एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा के अंतर्गत

330 रुपये वार्षिक प्रीमियम की दर से दो लाख रुपए की 'जीवन बीमा' सुविधा दी जा रही है। 9 मई 2015 से शुरू किए गए देशव्यापी बीमा योजना के अंतर्गत अभी तक 8.5 करोड़ से अधिक लोगों का बीमा किया जा चुका है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत अभी तक खुले सभी 17.74 करोड़ खाताधारकों को जीवन एवं दुर्घटना बीमा के कवर में लाना बैंकों की जिम्मेदारी है।

इस रक्षाबंधन के अवसर पर खासकर महिलाओं का अधिक से अधिक बीमा हो सके, इसके लिए कई आकर्षक योजनाएं प्रस्तुत की गई हैं। सुरक्षा-बंधन स्कीम के अंतर्गत भावनात्मक अपील करते हुए बहनों के लिए आजीवन बीमा की किस्तें चलती रहें इसके लिए कई तरह के गिफ्ट चेक बैंकों के माध्यम से जारी किए गए हैं। सुरक्षा डिपॉजिट स्कीम के अंतर्गत 201/- रुपया के चेक जारी किए गए हैं। प्रधानमंत्री सुरक्षा बंधन बीमा योजना के अंतर्गत 12 रुपये वार्षिक प्रीमियम की दो किस्तों को निकाल कर, शेष बचे 177/- रुपयों को 5 से 10 सालों के लिए फिक्स कर देने के बाद जो ब्याज आएगा, उसी ब्याज से इस योजना के प्रीमियम आजीवन भरे जा सकते हैं। 351/- रुपयों में जीवन सुरक्षा गिफ्ट चेक जारी किया गया है जिसके अंतर्गत प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा, प्रधानमंत्री सुरक्षा बंधन बीमा योजना दोनों को शामिल किया गया है। साथ ही साथ बैंकों का कमीशन लेकर इस गिफ्ट चेक का स्वरूप कुछ इस तरह (330/-, 12/-, 9/-) का बनता है। तीसरा गिफ्ट चेक 5001/- रुपया का है जो जीवन सुरक्षा डिपॉजिट स्कीम के नाम से जारी किया गया है । इस गिफ्ट चेक के द्वारा भी दो वर्ष के लिए दोनों बीमा योजनाओं के प्रीमियम की राशि को निकाल देने के बाद बचे 4317/- रुपए बैंक में 5 से 10 वर्षों के लिए फिक्स कर देने पर संबंधित व्यक्ति का आजीवन प्रीमियम भरा जा सकता है । अर्थात एक बार अगर आप किसी संबंधित / परिचित को इस में से कोई भी गिफ्ट चेक दे देते हैं तो कम से कम एक बीमा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा या प्रधानमंत्री सुरक्षा बंधन बीमा योजना किसी एक का आप उसके जीवन भर का प्रीमियम भर सकते हैं।

महिला सशक्तीरण की दृष्टि से सुरक्षा योजना एक महत्वपूर्ण पहल है। खासकर जब इसे रक्षाबंधन जैसे पर्व से जोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है तो इसके आर्थिक, सामाजिक एवं भावनात्मक तीनों पहलू सामने आते हैं। देश में यूं तो आधी आबादी (महिलाओं) की स्थिति काफी चिंताजनक रही है। महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त करना ही एक मात्र विकल्प है। देश की गरीब, पिछड़ी, वंचित महिलाओं का जीवन और दुर्घटना बीमा करवा कर उनको भी अपने जीवन के महत्व का एहसास करवाना ही सही अर्थों में आर्थिक समावेशन माना जाएगा। इस दृष्टि से सुरक्षा योजना पूरे देश में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने का सामर्थ्य रखता है।

आज़ादी के छः दशक बाद भी देश में महिलाओं की स्थिति में जिस गति से सुधार होनी चाहिए था, उस गति से सुधार नहीं हुआ है। इसके पीछे कई कारण हो सकते है। उन कारणों में एक महत्वपूर्ण कारण अभी तक आर्थिक रूप से ज्यादा से ज्यादा लोगों का समावेशन नहीं होना है। जब तक हम उन्हें आर्थिक मुख्यधारा से नहीं जोड़ते, तब तक देश में अशिक्षा, कुपोषण जैसे गंभीर चुनौतियों से नहीं लड़ सकते हैं। पहले प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत देश के सभी परिवारों की पहुँच बैंकों तक की गई है। उसके बाद सभी परिवारों के लिए बीमा की सुविधा मुहैया करवाना, किसी विपत्ति के समय उस परिवार के लिए एक बहुत बड़े संबल का काम करने का प्रयास किया गया है।

उदारीकरण के बाद महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है। लोगों की मानसिकता भी बदली है। परिवार और समाज दोनों जगहों पर महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। फिर भी जिस हद तक महिलाओं की स्थिति में सुधार होना चाहिए था, उस हद तक बदलाव नहीं आया है। खासकर ग्रामीण एवं सुदूर भारत में महिलाओं की स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। सुरक्षा-बंधन योजना उन गरीब ,पिछड़ी जगहों पर रह रही महिलाओं के लिए एक वरदान साबित हो रहा है। परिवार में आई किसी विपत्ति से सबसे ज्यादा प्रभावित महिलाएं एवं बच्चे ही होते हैं। सुरक्षा योजना के अंतर्गत विशेष रूप से महिलाओं को लक्ष्य बनाया गया है। जिसके चलते उनको न केवल आर्थिक संबल प्राप्त होगा साथ ही साथ परिवार और समाज में भी उनका कुछ महत्व है इस बात का बोध होगा।

पर्व आदि के अवसर पर हमारे यहाँ उपहार देने की परंपरा रही है। खासकर जब यह उपहार किसी के भविष्य को सुरक्षित करने का सामर्थ्य रखता हो उस स्थिति में इस उपहार का महत्व और भी बढ़ जाता है। इस गिफ्ट चेक के माध्यम से हम किसी एक व्यक्ति के लिए आजीवन जीवन/दुर्घटना बीमा के प्रीमियम की व्यवस्था कर देते हैं। सुरक्षा बंधन के अंतर्गत दिए जाने वाले गिफ्ट चेक को समग्रता में देखें तो यह योजना महिला सशक्तीकरण में एक अहम योगदान निभाएगी।

- आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

बैंकों का बदलता परिदृश्य और राजभाषा हिंदी

मनजीत सिंह मल्होत्रा

भारत 'अनेकता में एकता' वाला राष्ट्र है यद्यपि भाषा को लेकर जितने आंदोलन इस देश में हुए उतने किसी राष्ट्र में नहीं। लेकिन भारत सरकार ने इस स्थिति का बड़ी ही बुद्धिमता का परिचय देते हुए सामना किया तथा राष्ट्र को हिंदी भाषा समर्पित की। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो देश को एक सूत्र में बाँध सकती है और इसलिए हिंदी भाषा को सब भाषाओं की तुलना में उपयुक्त स्थान दिया गया है तथा इसके साथ-साथ संविधान में इस भाषा को राजभाषा का दर्जा भी दिया गया है।

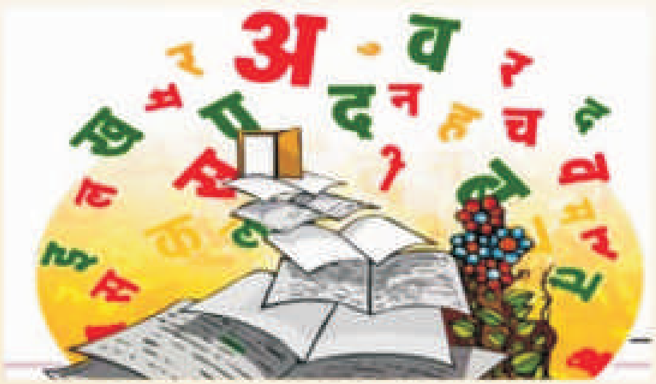

14 सितम्बर हिंदी दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष अलग-अलग बैंकों की शाखाओं एवं उनसे संबंधित कार्यालयों पर हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथा उन कार्यक्रमों में अंग्रेज़ी की दासता से मुक्त होने के लिए हिंदी भाषा की उपयोगिता का वर्णन किया जाता है। सोचना यह है कि क्या यह उपलब्धि के उल्लास का महोत्सव है अथवा हिंदी की अस्मिता, प्रतिष्ठा और विकास के संकल्प का दिवस है। प्रारम्भ में बैंकों में कार्य करने में यह उल्लास का दिवस मनाया जाता रहा है। किंतु पिछले कुछ वर्षों में यह दिवस भारत की भाषा समस्या के समाधान चिन्तन में परिवर्तित हो रहा है। देश की एकता और अखण्डता के लिए अनेक निर्णायक तत्वों में से एक तत्व भारत की भाषा की समस्या भी रही है।

जहाँ तक हिंदी प्रदेशों का प्रश्न है हिंदी के प्रचार और प्रसार के संबंध में जन-साधारण में कुछ भ्रांतियां भी हैं। वस्तु स्थिति यह है कि हिंदी इस देश में तेजी से फलफूल रही है। सरकारी दफ्तरों, बैंकों और बीमा कंपनियों के कामकाज हिंदी में अधिकता से होने लगे हैं। विभिन्न संबंधित कार्यालयों में हिंदी अधिकारियों की नियुक्तियां लगातार की जा रही है। उनका यह कर्तव्य बन जाता है कि बैंकों इत्यादि में कार्य करने में जो कठिनाइयां उजागर होती है उसका निवारण करना तथा इसके साथ-साथ हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना। यदि हमें अंग्रेज़ी का वर्चस्व समाप्त करना है तो अधिक से अधिक कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए पहल करनी पड़ेगी।

सरकारी कार्यालयों के साथ-साथ बैंकों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। समय-समय पर हिंदी की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए आदेश जारी किए जाते हैं तथा अंग्रेज़ी में कार्य करने के अभ्यस्त कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है तथा हिंदी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का समाधान किया जाता है। अधिकांश बैंक कर्मचारी पुरानी नियुक्ति होने के कारण अंग्रेजी भाषा का अधिकता से प्रयोग करते हैं क्योंकि बैंकों से संबंधित हिंदी शब्दावली का चलन बाद में हुआ है। इसलिए बैंकों के कर्मचारी अंग्रेज़ी में कार्य करने के अभ्यस्त होने के कारण हिंदी में कार्य करने में कठिनाइयों का अनुभव करते हैं तथा इसके साथ-साथ कुछ कर्मचारी अंग्रेज़ी में कार्य करने में गर्व महसूस करते हैं और हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों की निरंतर आलोचना करते रहते हैं जिससे उन कर्मचारियों में अपनी ही भाषा के प्रति हीन भावना जाग्रत हो जाती हैं जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

व्यावसायिक दृष्टि से भी हिंदी अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली है। भारत में ऐसा कोई प्रदेश नहीं है जहाँ हिंदी के द्वारा व्यापार न होता हो। बैंकों में कार्य करते समय हिंदी भाषा का प्रयोग करने के लिए हमें किसी प्रकार की हिचकिचाहट महसूस नहीं करनी चाहिए। यद्यपि न्यायिक, वैज्ञानिक तकनीकी तथा बैंकों से संबंधित शब्दकोष बन चुके हैं और अत्यधिक प्रचलित है फिर

डाक टिकट की तरह बनें। जब तक मंजिल तक न पहुँच जाएं, उसी चीज पर डटे रहें।

भी अंग्रेज़ी के कुछ शब्दों का हिंदी रूपांतरण न ज्ञात हो तो उन्हें ज्यों का त्यों देवनागरी भाषा में लिख देना चाहिए। अनुवादित हिंदी के स्थान पर मूलतः साधारण बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

सितम्बर माह के आरम्भ होते ही, बैंकों के हिंदी अधिकारियों के सिर पर चिंता सवार हो जाती है 'हिंदी दिवस', 'हिंदी सप्ताह' अथवा 'हिंदी माह' कैसे मनाया जाए। इन दिनों हमें यह महसूस होता है कि हिंदी हमारी राजभाषा है। प्रायः यह देखा गया है कि शाखाओं से संबंधित हिंदी की त्रैमासिक रिपोर्ट जब कार्यालयों में भेजी जाती है तो उसी रिपोर्ट को सत्य मानकर यह अनुमान लगा लिया जाता है कि संबंधित शाखाओं में हिंदी के कार्यों में वृद्धि हो रही है। हिंदी अधिकारियों को समय-समय पर शाखाओं में जाकर उसकी सत्यता को प्रमाणित करना चाहिए। हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन नियमित रूप से करना चाहिए तथा संबंधित शाखाओं में पहुँचकर कर्मचारियों को हिंदी का प्रयोग करने में जो कठिनाइयाँ आती हैं उनका निवारण करना चाहिए और जो कर्मचारी अपने द्वारा किए गए कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें, उनको प्रोत्साहित करना चाहिए।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि हिंदी हमारा गौरव है हमारे देश की पहचान है। हिंदी भक्ति प्रेम और सद्भाव की भाषा है तथा राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। यदि इसी प्रकार हम सब प्रयासरत रहें तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी भाषा का बैंकों में वर्चस्व बनेगा तथा सब भाषाओं में सिरमौर बन कर राज करेगी। इसकी महत्ता को उचित समझते हुए प्रत्येक बैंक कर्मचारी को प्रण कर लेना चाहिए कि वह अपने द्वारा किए जाने वाले पत्राचार या जन-प्रशासन के कार्यों में हिंदी भाषा का प्रयोग बिना झिझक करें जिससे आने वाले कल के लिए एक ही भाषा होगी और वह होगी "हिंदी भाषा"।

- सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

व्यंग्य

कामकाजी युगल की पीड़ा

अमित नागर

कामकाजी युगल की व्यथा सुनाता हूँ दोस्तो, परिवार से दूर रहने का मर्म बताता हूँ दोस्तो।

कामकाजी युगल कहलाते हैं, समाज में प्रतिष्ठा पाते हैं, परंतु सब कुछ है, बेकार दोस्तो, जब पति व पत्नी नहीं हैं साथ दोस्तो।

यह भी एक मजबूरी है नौकरी भी जरूरी है, पति-पत्नी की अलग-अलग गृहस्थी आधुनिक युग की मजबूरी है।

छुट्टी पर जब भी घर जाता हूँ, अक्सर पत्नी से यही ताने खाता हूँ, "साप्ताहिक पति व पिता की भूमिका कब तक निभाओगे, कहो तो पूरी तरह घर कब आओगे। बीमार हो जाऊँ तो आते नहीं, सामाजिक कार्य में जाते नहीं, यह कैसी नौकरी है जहाँ पति-पत्नी का साथ गैर जरूरी है।

बेटा भी अब तुतलाने लगा है, जिद करके मचलने लगा है, पापा वापस मत जाओ ना, घर पर ही रुक जाओ ना।

हमने भी स्थानान्तरण की अर्जी लगाई है परंतु प्रशासन ने वर्षों से लटकाई है। छोटे-बड़े बाबुओं से भी गुहार लगाई है। साहब मेरी भी गृहस्थी है। साहब मेरी भी गृहस्थी है। जो वर्षों से तरसती है।

मेरी भी नैया पार लगाओ ना, स्थानान्तरण तो करवाओ ना, परंतु समय का अभिशाप है, और सभी मन्नतें नाकाम हैं। स्थानान्तरण करने वालों से लगता है पिछले जन्म का कोई राग है।

साहब अब तो घर भिजवाओ ना, हमको यु तरसाओ ना, नौकरी के साथ गृहस्थ जीवन का हमें भी सुख दिलवाओ ना।

प्रधान कार्यालय, जोखिम प्रबंधन विभाग

हिंदी दिवस : एक सोच

संजीव श्रीवास्तव

आज हिंदी दिवस है, कार्यालय में कार्यक्रमों का आयोजन होना है और हिंदी पखवाड़े का समापन भी। लोगों को हिंदी में कार्य करने का प्रण करना है, हिंदी में कार्य सरल व सुगम है, इस पर वक्तव्य होंगे। प्रतियोगिताओं का आयोजन व पुरस्कार वितरण भी होना है। नव नियुक्त अधिकारियों व कार्मिकों में उत्साह है परंतु न जाने हृदय में वो उल्लास नहीं हो रहा है। मुझे प्रभाष जोशी की रचना "हिंदी की दुर्दशा" का स्मरण हो आया, हालांकि ये सरकारी महकमों द्वारा की गई उपेक्षाओं पर आधारित है परंतु वास्तविकता यह है कि दशकों से हिंदी आम नागरिकों द्वारा भी उपेक्षित हो रही है। पाठशालाओं व विद्यालयों में ही देख लें, जो व्यक्ति थोड़ा भी खर्च कर सकता है कष्ट सह कर भी अपने बच्चों को अंग्रेजी विद्यालयों में पढ़ाता है। ज्ञान, नौकरी आदि की बातें तो हैं मुख पर, सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न होता है। आज के बच्चे इक्यासी, नवासी जैसे अंकों से तो अपरिचित हैं ही - पैंतालीस व पैंसठ भी समझ के बाहर होते जा रहे हैं, इसमें न उन्हें, न उनके परिवार को किंचित भी लज्जा महसूस होती है बल्कि वे गर्व का ही अनुभव करते हैं।

हिंदी की रोटी खाने वाले बालीवुड के सितारे मंचों से एवं साक्षात्कार के समय फर्राटे से अंग्रेज़ी ही बोलते हैं। जैसे हिंदी में बात करना हीन भावना का एहसास करा रहा है लोगों में, खासतौर पर संभ्रान्त (?) वर्गों में, विडंबना ये भी है कि राजनेताओं का ध्यान इस ओर नहीं है, ये एक ऐसा विषय है जिस पर सभी ने चुप्पी साध रखी है।

आइए, हम सब संकल्प करें, इस उधारवाद का परित्याग करें व अपनी भाषा को वैचारिक व्यवहारिक, व्यावसायिक स्तर पर अपनाएं व आत्मसात करें। हम गर्व से इसका प्रयोग करेंगे तो तरुण, किशोर व बच्चे भी इसे अपनाएंगे, हमारे द्वारा की गई उपेक्षा इसे सांस्कृतिक रूप से विपन्न करेगी, इसका ध्यान रखें।

यह दुरुह न होकर सरल कार्य है, हम कर सकते हैं, सिर्फ जमी हुई धूल की परत साफ कर अपने मस्तिष्क को केंद्रित करने की आवश्यकता है, यह न भूलें :-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।

- आँचलिक प्रबंधक, बरेली

मसला

परविंदर कौर

बचपन से ही
जब भी घर से बाहर निकलती,
राह के कीचड़ से बड़ा घबराती।

कीचड़ पहले पैरों में लगता,
फिर कपड़े गंदे करता।

माँ कहती - कीचड़ से बचने के लिए,
कहीं से दो ईंटें ढूंढ कर,
कीचड़ में ईंट रख के,
अगली पर पाँव धरा कर।

ऐसे ही मैं कीचड़ पार करती रही,
एक ईंट से दूसरी ईंट पर पैर धरती।

पर आज कीचड़ घुटनों तक आ पहुँचा है,
और हर जगह पर पसरा हुआ है,
हर कोई कीचड़ से लथपथ,
छोटे-बड़े बूट और बरगद जैसे दरख़्त।

जिस बरगद की छाँव में बैठती रही,
आज उसके समीप जाने से भी,
हो रही भयभीत।

मन में उठते कई सवाल,
हल्के से हवा के झोंके के साथ,
कहीं कीचड़ से सनी,
बरगद की दाढ़ी मुझे कीचड़ से न भर दे।

ईंट-पत्थरों में,
अब वो ताकत कहाँ,
कि आज कोई कीचड़ पार करा सके।

और अब माँ भी नहीं रही,
जो इसका हल बताए,
आँखों में कई सपने उलझे,
पता नहीं कब, कैसे ये मसला सुलझे।।

- प्रधान कार्यालय, सामान्य प्रशासन विभाग

इरादा हो तो उस शीशे की तरह हो, जो टूटने के बावजूद छवि दिखाने का अपना गुण नहीं भूलता।

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, श्री जतिन्दर बीर सिंह, (आई.ए.एस.) मंच पर मध्यासीन। उनके दाएं बैठे हैं श्री रमिंदर जीत सिंह, महाप्रबंधक तथा दाएं है श्री विर्क, आंचलिक प्रबंधक

తెలుగు లిపి
भाषा
বাংলা